भारत पेट्रोलियम
कोच्चि रिफ़ाइनरी

ज्वालाध्वनि

राजभाषा वार्षिकी 2019

स्वच्छ भारत

स्वच्छता ही सेवा
2019

यह सिर्फ एक विचार नहीं,
एक गतिविधि नहीं
एक सामाजिक कार्यक्रम ही नहीं,
बल्कि यह एक प्रतिबद्धता है
चलिए हम स्वच्छ भारत का
सपना साकार करें

ज्वालाध्वनि

वर्ष 2019 वॉल्यम : 9 अंक : 9

राजभाषा वार्षिकी

मुख पृष्ठ
फोटोग्राफ: श्री बिजोय के आई, अनुरक्षण विभाग

संपादकीय

व्यावसायिकता हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करती है । बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी की नई परियोजनाएं इसका एकदम उदाहरण है ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी की नई परियोजनाओं के लिए देश भर के बीपीसीएल यूनिटों से स्थानांतरित कर्मचारियों / दूसरे संगठनों से कोच्चि रिफ़ाइनरी में नियुक्त कर्मचारियों तथा हिंदी भाषी अनियत कामगारों को बडी संख्या में काम पर लगाए जाने से कंपनी में सांस्कारिक मेल-मिलाप और हिंदी भाषा की तेज़ वृद्धि हुई है । कर्मचारियों में आपसी बोलचाल की भाषा हिंदी बनी । इसी माहौल में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य भी तेज़ हो गया ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी में हिंदी भाषा पर रुचि रखनेवाले कर्मचारियों की संख्या बढ जाने के फलस्वरूप हिंदी में नोटिंग, ई-मेल, लेख भी बढ गए ।

भारत को स्वच्छ बनाए रखने और भारत की अपनी भाषा हिंदी का प्रयोग बढाने का काम जारी करके भारत पेट्रोलियम कोच्चि रिफ़ाइनरी देश की संस्कृति, जनता का स्वास्थ्य, प्रकृति, भाषा, सभी में ताल मेल लाने के भारत के प्रयास में हाथ देकर आगे जा रही हैं ।

2 पाठकों के पत्र

3 कंपनी समाचार

14 हिंदी पखवाडा समारोह

16 राजभाषा समाचार

21 तकनीकी समाचार

25 लेख

27 कहानी/ कविता

राजभाषा ट्रोफी

हिंदी हमारे राष्ट्र की वाणी है । यह हमारे लिए गर्व की बात है कि राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय काम के लिए कोच्चि टोलिक द्वारा संस्थापित राजभाषा ट्रोफी बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने जीता है । इसमें शक नहीं है कि कोच्चि रिफ़ाइनरी के हरके कर्मचारी और राजभाषा टीम के तहे दिल से सच्चे प्रयासों के कारण हमें यह सम्मान मिला है । सबको हार्दिक बधाई !

सिबी वर्गीस,
वित्त विभाग

ज्वालाध्वनि - राजभाषा वार्षिकी 2017-18

आपके द्वारा संपादित गृह पत्रिका ज्वालाध्वनि की राजभाषा वार्षिकी 2017-18 का अंक पढकर बेहद खुशी हुई । राजभाषा नियमों के अनुसार आपका कार्यालय 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत आता है, फिर भी आप 'क क्षेत्र के कार्यालय से भी बेहतरीन कार्य हिंदी में कर रहे हैं, आपके कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा संस्थापित राजभाषा पुरस्कार भी प्राप्त है। इसके लिए कोच्चि रिफ़ाइनरी की पूरी टीम को हार्दिक बधाई देती हूँ और भविष्य में हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में और बेहतरीन कार्य संपादन करने के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं देती हूँ ।

प्रभा कामत
सहायक अधिकारी (अनुवाद),
एअर इंडिया, कोच्चि

केआर राजभाषा समन्वयक सम्मेलन

18 दिसंबर 2018 के दौरान आयोजित कोच्चि रिफ़ाइनरी राजभाषा समन्वयक सम्मेलन, बहुत ही लाभदायक रहा ।
मैं खुद एक राजभाषा समन्वयक होने के कारण, यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह कार्यक्रम, राजभाषा कार्यान्वयन में हमें अपनी भूमिका और कर्तव्य समझाने में कामयाब रहा है । इसके अलावा कार्यक्रम में राजभाषा अधिनियम और नियम संबंधी विविध प्रावधानों को भी समझाया गया था । ऐसे कार्यक्रम ज़रूर हमें राजभाषा कार्यान्वयन की तरफ़ अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में सहायक रहेंगे ।

सुरेश कुमार आर, सीपीओ, केआर

जानकारी युक्त अंक

ज्वालाध्वनि वार्षिकी का हर अंक मैं बडे चाव से पढती हूँ । इस में प्रकाशित "सावधान ! ऐसा न हो कि आप उलझन में पडें," बहुत ही रोचक और उपयोगी रहा । इसमें प्रकाशित साहित्यिक रचनाएं भी अद्वितीय रहीं । आशा है, भविष्य में भी हमारा राजभाषा कार्यान्वयन चिर नवीन कार्यक्रमों से आगे बढेगा ।
पत्रिका में सामान्य ज्ञान से संबंधित कॉलम, सामयिक विषयों पर लेख आदि भी शामिल करें तो कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए यह फायदाजनक रहेगा ।
शुभ कामनाओं सहित,

एल शिवलीला, वित्त विभाग

संपादक
जयेश शाह
कार्यपालक निदेशक (एचआर)

संपादकीय बोर्ड
जोर्ज तोमस
एमिल टोप्पो
गिरिजा वी आर

सह संपादक
लता कामत के पी
अजिता के के

ज्वालाध्वनि राजभाषा वार्षिकी में अभिव्यक्त विचार, प्रबंधन का होना अनिवार्य नहीं है

सेंट फ्राँसीस प्रेस, कोच्चि में मुद्रित

राजभाषा अनुभाग
बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी
पोस्ट बैग नं. 2, एरणाकुलम जिला
केरल द्वारा प्रकाशित
टेलीफोन : 0484 2722061
फैक्स : 2720856

माननीय प्रधानमंत्री ने कोच्चि रिफ़ाइनरी में सरकारी क्षेत्र की सबसे बडी रिफ़ाइनरी को ऊर्जान्वित किया

27 जनवरी 2019 के ऐतिहासिक दिन पर कोच्चि रिफ़ाइनरी में टीम बीपीसीएल ने भारत पेट्रोलियम के एकीकृत रिफ़ाइनरी विकासन कॉम्प्लेक्स और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के कोचिन बोतलिंग प्लांट में माउण्डेड स्टोरेज वेसल का भारत के प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों से राष्ट्र समर्पण देखा । उन्होंने, केरल के राज्यपाल न्यायमूर्ति पी सदाशिवम, केरल के मुख्यमंत्री श्री पिणरायी विजयन, केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय पर्यटन मंत्री श्री अल्फोन्स कण्णन्तानम, सांसद प्रो. के वी तोमस और प्रो. रिचर्ड हे और विधान सभा सदस्य श्री वी जी सजीन्द्रन की महनीय उपस्थिति में राष्ट्र समर्पण का कार्य संपन्न किया।

इस ऐतिहासिक दिन पर कोच्चि रिफ़ाइनरी में भारत पेट्रोलियम के पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स का और एट्टुमानूर में कौशल विकास संस्थान का शिलान्यास भी किया गया। बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी के लिए सुनहरे अक्षरों में लिखे गए ये हरेक पल, उपस्थित हज़ारों लोगों और टेलीविज़न और ऑन लाइन के माध्यम से दसियों हज़ारों ने देखा ।

यह एक ऐसा दिन था जहाँ मिशन पूरे किए गए और नए मिशन शुरू किए गए । इतिहास में यह दिन ऐसा लिखा जाएगा कि वह दिन जब प्रधानमंत्री ने कोच्चि रिफ़ाइनरी को ऊर्जान्वित किया और जब हम ने केरल को ऊर्जान्वित करने, नए भारत को ऊर्जान्वित करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः प्रणबद्ध किया।

पहला स्टोप : कोच्चि रिफ़ाइनरी मुख्य नियंत्रण कक्ष

प्रधानमंत्री जी ने उनके आगमन पर सबसे पहले बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी के अधुनातन मुख्य नियंत्रण कक्ष (एमसीआर) का दौरा किया, जहाँ उनका स्वागत पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सचिव श्री एम एम कुट्टि, बीपीसीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री डी राजकुमार और बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी के कार्यपालक निदेशक श्री प्रसाद के पणिक्कर द्वारा किया गया । प्रधानमंत्री के साथ केरल के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री और पेट्रोलियम मंत्री भी उपस्थित रहे ।

57400 वर्गफुट के क्षेत्र फल का एमसीआर, कंक्रीट की दीवार, विस्फोट सह मकान और चार निर्गम के साथ अभिकल्पित किया गया है। मकान का संपूर्ण एचवीएसी सिस्टम, फयर अलार्म सिस्टम और क्लीन एजेंट सिस्टम है । विशेष गैलरी में, जहाँ कोच्चि रिफ़ाइनरी के छोटा मोडल रखा गया है, वहाँ कोच्चि रिफ़ाइनरी को सबसे बडी सरकारी रिफ़ाइनरी बना देने वाली परिवर्तनात्मक परियोजना का परिचय प्रधानमंत्री को दिया गया। इस लघु प्रतिकृति में पेट्रोकेमिकल परियोजना के प्रथम चरण सहित कोच्चि रिफ़ाइनरी में विद्यमान सभी सुविधाएं मौजूद है । तदुपरान्त, एमसीआर में अपने विस्तृत प्रस्तुतीकरण में हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने केरल राज्य के विकास में बीपीसीएल और कोच्चि रिफ़ाइनरी के परिवर्तनकारी योगदान पर प्रकाश डाला । प्रधानमंत्री ने एमसीआर में पैनल इंजीनियरों के साथ भी बातचीत की और टीम के साथ ग्रुप फोटो भी लिया ।

माननीय प्रधानमंत्री और माननीय मुख्यमंत्री के स्वगत करते हुए निदेशक (रिफ़ाइनरी)

प्रधान मंत्री द्वारा समर्पण

भारत के प्रधानमंत्री द्वारा ही ऐतिहासिक समर्पण और नई परियोजनाओं का शुभारंभ करना कोच्चि रिफ़ाइनरी के लिए बडे ही नाज़ और विशेष खुशी की बात रही है। भारत पेट्रोलियम कोच्चि रिफ़ाइनरी के एकीकृत रिफ़ाइनरी विकासन कॉम्प्लेक्स का समर्पण, जो कोच्चि रिफ़ाइनरी को सबसे अधिक शोधन क्षमता युक्त सरकारी रिफ़ाइनरी बनाने के साथ साथ विश्वस्तरीय रिफ़ाइनरी में तब्दील करने की दृष्टि से चालू किए एकीकृत रिफ़ाइनरी विकासन परियोजना की सफल परिणति को चिह्नित करता है ।

भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड कोच्चि रिफ़ाइनरी ने वर्ष 1966 में प्रति वर्ष 2.5 मिल्यन मेट्रिक टन की शोधन क्षमता के साथ राष्ट्र को ईंधन प्रदान करना शुरू किया था। 23 सितंबर 1966 में रिफ़ाइनरी, राष्ट्र को समर्पित किया गया था। यह देश की आठवीं पेट्रोलियम रिफ़ाइनरी थी । गत 5 दशकों में कोच्चि रिफ़ाइनरी, 6 गुना विकसित हुई है ।

एकीकृत रिफ़ाइनरी विकासन कॉम्पलेकस, बढती ऊर्जा ज़रूरतें, खासकर दक्षिण भारत की ऊर्जा ज़रूरतें पूरा करने और वाहन ईंधनों को और पर्यावरणानुकूल बनाने के लिए 6504 करोड रुपए की लागत पर कार्यान्वित किया गया था । इस महाकाय आईआरईपी परियोजना, 125 मिल्यन श्रमघंटे लेकर, 17000 किलोमीटर पाइपलाइन और 7000 किलोमीटर केबल लगाकर, 41000 टन के उपस्कर खाडा करके पूरी की थी। इसमें से 220 बहुत बडे उपस्कर, सडक और जलमार्ग के माध्यम से कार्यस्थल पर पहुँचा गया था ।

इस परियोजना के सफल समापन और कमीशनिंग से कोच्चि रिफ़ाइनरी, प्रति वर्ष 15.5 मिल्यन मेट्रिक टन की शोधन क्षमता युक्त विश्वस्तरीय रिफ़ाइनरी में परिवर्तित हो गई है । यह 16504 करोड रुपए का निवेश, केरल राज्य का सबसे बडा एकल निवेश रहा है और इसने बडी मात्रा में रोज़गार के अवसर पैदा करने और इस क्षेत्र के चौतरफ़ा आर्थिक विकास में मदद प्रदान किया है ।

प्रधानमंत्री ने इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के उदयपेरूर के बॉतलीकरण प्लांट में माउण्डेड स्टोरेज वेसल का भी उद्घाटन किया। यह एलपीजी भंडारण, लगभग 50 करोड रुपए की लागत पर स्थापित किया गया था, जिससे भंडारण क्षमता 4350 एमटी तक बढ गया था । इससे एरणाकुलम, इडुक्कि, तृश्शूर, कोट्टयम, पत्तनमतिट्टा, आलपुष़ा और मलपुरम जिले के लाखों परिवारों लाभान्वित होंगे ।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर केआर में बीपीसीएल पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स और कौशल विकास संस्थान, एट्टुमानूर का भी शिलान्यास करके कोच्चि रिफ़ाइनरी का सपना साकार किया ।

वर्ष 2018-19 के दौरान बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी की प्रचालनात्क उत्कृष्टता

आईआरईपी कमीशनिंग के बाद प्रचालन का प्रथम वर्ष यानी, वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान श्रेष्ठ निष्पादन के लिए सभी कोचरिफ़ाइनरों को हार्दिक बधाइयाँ। यह, बेशक टीम केआर के समर्पित प्रयास का साक्ष्य है।

वर्ष 2018-19 के दौरान के निष्पादन के प्रमुख बिंदुएं हैं :

★ 01 अप्रैल 2019 को कर्मचारियों के लिए 58.90 मिल्यन दुर्घटना रहित श्रमघंटे (4840 दिनों के समतुल्य) पूरा किए ।

★ वर्ष के लिए एमओयू और बीपी लक्ष्यांक पूरा करते हुए 16.05 एमएमटीपीए का उच्चतम कच्चा तेल संसाधन

★ आईआरईपी कमीशनिंग के बाद प्रचालन के प्रथम वर्ष के दौरान 103.5% क्षमता उपयोग प्राप्त किया।

★ कच्चा तेल संवेशप्रवाह पर 82.5% का आश्रुत उत्पाद और 7.86% की ईंधन एवं हानि ।

★ कच्चा तेल चार्ज पर 76.0 वाल्यम % का आश्रुत उत्पाद और 7.86% की ईंधन एवं हानि ।

★ वीजीओएचडीएस शटडाउन को अनायोजित माना गया है (यदि जनवरी 15, 2019 से वीजीओएचडीएस शट डाउन को योजनाबद्ध समझा जाएं तो ओए, 98.1% है)

एमओयू और बीपी लक्ष्यांक के संदर्भ में प्राचलों के अनंतिम निष्पादन सार है :

क्रम सं	केपीआई	एमओयू लक्ष्यांक	बीपी लक्ष्यांक	वास्तविक (अनंतिम)
1	कच्चा तेल चार्ज, एमएमटी	15.5	15.6	16.05
2	कच्चा तेल संवेशप्रवाह, एमएमटी	15.58	15.71	16.22
3	एमबीएन, एमबीटीयू/बीबीएल/ एनआरजीएफ	76.5	76.5	72.0
4	कच्चा तेल क्षमता उपयोग, %	100	100.6	103.5
5	सुरक्षा-रिपोर्ट करने योग्य दुर्घटनाओं की सं.	शून्य	शून्य	शून्य
6	प्रचालनात्मक उपलब्धता (ओए), %	97	97	96.5*

प्रमुख उत्पादों के उत्पादन एवं बिक्री तुलना

★ वर्ष 2018-19 में प्रोपिलीन के 65.8/65.9 टीएमटी सर्वोच्च उत्पादन/बिक्री, यह वर्ष 2014-15 में 28.8 / 28.6 की तुलना में है ।

★ एक महीने (जनवरी 2019) के लिए 1517.2 टीएमटी का सर्वोच्च कच्चा तेल चार्ज और एक महीने (मार्च 2019) के लिए 1558.3 टीएमटी का सर्वोच्च संवेश प्रवाह।

वर्ष 2018-19 की दूसरी प्रमुख विशेषताएं

★ भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने 27 जनवरी 2019 को बीपीसीएल केआर की एकीकृत रिफ़ाइनरी परियोजना (आईआरईपी) को राष्ट्र को समर्पित किया और पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास और कौशल विकास संस्थान (एट्टुमानूर) का शिलान्यास रिमोट में किया ।

★ केरल में अभूतपूर्व बाढ की स्थिति के कारण रिफ़ाइनरी के चारों ओर प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद कोच्चि रिफ़ाइनरी ने अगस्त 2018 के महीने में बिना रुकावट के रिफ़ाइनरी संचालन सुनिश्चित किया ।

★ एरणाकुलम जेट्टि से कोच्चि रिफ़ाइनरी तक बिछाई गई हीट ट्रेस्ड पाइपलाइन को फरवरी 2019 में कमीशन किया गया। इस देशपार पाइपलाइन के माध्यम से अब तक कुल 4 पार्सल स्थानांतरित किए गए । वर्ष 2018 के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्माण परियोजना के लिए सीआईडीसी पुरस्कार प्राप्त किया ।

★ पोलियॉल परियोजना के लिए बोर्ड और एमओईएफ मंजूरी प्राप्त की। अनुमानित परियोजना लागत, 11130 करोड रुपए हैं ।

★ वर्ष 2007 में कमीशनिंग होने के बाद, 25 अगस्त 2018 को कोच्चि एसपीएम का 1000 वाँ तेल टैंकर है - स्यूज़ मैक्स टैंकर एमटी मोगरा, जो है 139 टीएमटी बसरा लाइट क्रूड ऑयल।

★ दिनांक 01 अप्रैल 2019 को हमने कमीशनिंग के बाद, 113.9 एमएमटी कच्चे तेल को अपने एसपीएम के माध्यम से निपटाया है ।

★ बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने 22 अक्तूबर 2018 को बीपीसीएल के अपने कच्चे तेल का पहला पार्सल प्राप्त किया, जो देश की ऊर्जा सुरक्षा को बढाने की दिशा में बीपीसीएल का एक और कदम है ।

★ कृषि प्रसंस्करण को बढावा देने के प्राथमिक उद्देश्य से बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने अक्तूबर 2018 के महीने में विशेष उत्पाद, खाद्य ग्रेड गुणता हेक्सेन लॉंच किया है, जो दक्षिण भारत के कृषि क्षेत्र के लिए एक वरदान साबित हो सकता है ।

★ पॉलिमर ग्रेड प्रोपिलीन का उत्पादन और बिक्री, अक्तूबर 2018 को प्रारंभ हुआ ।

★ वर्ष 2018-19 के दौरान निम्नलिखित नए कच्चा तेल का संसाधन करके कोच्चि रिफ़ाइनरी ने कच्चे तेल की टोकरी बडी की हैः लाइट लूसियाना स्वीट (यूएसए), कुवैत सूपर लाइ(कुवैत), उम्म लुलु (यूएई) और ओकोरो (नाइजीरिया)।

★ विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून 2018 को कोच्चि रिफ़ाइनरी में 120 किलोवाट का सौर ऊर्जा संयंत्र कमीशन किया गया ।

★ नए रूप से प्रारंभ कण्णूर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए एविएशन टर्बाइन फ्यूअल (एटीएफ) के साथ पहला ट्रक बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी से 19 अक्तूबर 2018 को रवाना हुआ ।

★ वर्ष 2018-19 के लिए 25 करोड रुपए की राशि के कुल 59 सीएसआर परियोजनाएं अनुमोदित की गईं। सीएसआर गतिविधियों की निगरानी के लिए नया पोर्टल कार्यान्वित किया गया है ।

★ वर्ष 2018-19 के लिए लक्ष्यांकित ईएसए और आईएसए सिफारिशें, 100 प्रतिशत पूरा किए गए हैं ।

★ क्रूड यूनिट-2 में संसाधन सुरक्षा प्रबंधन कार्यान्वयन किया गया है । मार्च 2020 तक पूरी रिफ़ाइनरी में पीएसएम कार्यान्वित किया जाएगा । पीएसएम के लिए नया पोर्टल प्रारंभ किया गया है ।

★ बीपीसीएल केआर में, अपने प्रदूषण मुक्त वातावरण को प्रदर्शित करते हुए दो और तितली पार्क जोडे गए हैं।

★ तीस से अधिक ऊर्जा संरक्षण योजनाओं के कार्यान्वयन ने 2018-19 में लगभग 18760 मेट्रिक टन ईंधन की बचत की ।

★ रिफ़ाइनरी के अंदर ग्रीन बेल्ट को बढाने के लिए 25000 पेड लगाए गए ।

★ सीसीआर और आईएसओएम यूनिट के लिए बेहतर फीडस्टॉक बनाने के लिए गैसोलिन स्प्लिटर यूनिट में डीडब्ल्यूसी प्रौद्योगिकी को कार्यान्वित किया

गया। यह कॉलम, मार्च 2019 के पहले सप्ताह में कमीशन किया गया ।

★ सीआरडीसी/ईआईएल ने प्रोटोटाइप डिसाल्टर डिज़ाइन करके सीडीयू-3 में स्थापित किया और मार्च 2019 में फील्ड ट्रायल शुरू हुआ ।

★ निम्नलिखित योजनाबद्ध शटडाउन/टर्नएराउण्ड काम सफलतापूर्वक पूरे किए गए हैं :

क. डीएचडीएस रेक्टर की उत्प्रेरक स्किमिंग गतिविधियाँ - मई 2018

ख. एफसीसीयू यूनिट का प्रमुख टर्नएराउण्ड (6 साल के प्रचालन के बाद) - सितंबर 18 / अक्तूबर 2018

ग. पहली बार आईआरईपी यूनिटों का शटडाउन (सीडीयू 3, डीएचडीटी, वीजीओएचडीटी, पीएफसीसीयू, डीसीयू और एसआरयू 3)

घ. वीजीओ एचडीएस/एसआरयू-2

पुरस्कार एवं सम्मान

आईआरईपी के कमीशनिंग में महत्वपूर्ण अंतःविषय संबंधी अभियांत्रिकी योगदान और भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की सबसे बडी रिफ़ाइनरी के रूप में बीपीसीएल केआर की स्थिति बनाने की पहचान में भारतीय प्रौद्योगिकी कांग्रेस असोसिएशन (आईटीसीए) द्वारा स्थापित प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता पुरस्कार 2018 प्राप्त किया है ।

बीपीसीएल केआर ने केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (केएसपीसीबी) द्वारा स्थापित, बहुत बडे उद्योगों की श्रेणी में प्रदूषण नियंत्रण के उपायों के लिए लगातार 12वें वर्ष केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण उत्कृष्टता पुरस्कार जीता है ।

बीपीसीएल केआर ने सार्वजनिक क्षेत्र में बाल और बुजुर्ग देखभाल के लिए केएमए सीएसआर पुरस्कार 2018 और पर्यावरण एवं हरियाली के लिए द्वितीय पुरस्कार जीता है ।

बीपीसीएल केआर ने वर्ष 2018 के लिए प्रचालन में पर्यावरण उत्कृष्टता के लिए एपेक्स स्वर्ण पुरस्कार जीता है ।

बीपीसीएल केआर ने वर्ष 2018 के लिए पीडीपीपी (प्रोपिलीन डेरिवेटीव पेट्रोकेमिकल परियोजना) में सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा रीतियों के लिए प्रतिष्ठित अपेक्स इंडिया फाउण्डेशन व्यावसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य प्लैटिनम अवार्ड भी जीता है ।

बीपीसीएल केआर ने वर्ष 2017-18 के लिए एसडीआर (सस्टेनेबिलिटी डाटा रिपोर्टिंग) पुरस्कार जीता है जो अप्रैल 2018 को एचएसएसई मीट, तमिलनाडु में प्रदान किया गया।

बीपीसीएल केआर को 5 अक्तूबर 2018 को मेसर्स सिलेक्स मुंबई द्वारा भारत एचएसई शिखर सम्मेलन पुरस्कार 2018 में तेल एवं गैस सेक्टर में एचएसई श्रेष्ठता वर्ग में विजेता घोषित किया गया है ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी के गुणता सर्कल ने ग्वालियर में 21 दिसंबर 2018 को आयोजित गुणता अवधारणाओं पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पार एक्सेलेंस पुरस्कार जीता है ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी ने ऊर्जा संरक्षण गतिविधियों और भाप अनुकूलन प्रबंधन उपायों के लिए केरल राज्य ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2018 प्राप्त किया ।

बीपीसीएल केआर ने लगातार दूसरे वर्ष एनआईपीएम केरल श्रेष्ठ कॉर्पोरेट नागरिक पुरस्कार जीता है ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने 25 जनवरी 2019 को अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस पर शीर्ष आयात और निर्यात पुरस्कार जीता है । इस वर्ष के समारोह का विषय रहा, निर्बाध व्यापार, यात्रा और परिवहन के लिए स्मार्ट बार्डर्स ।

एक्रिलिक एसिड यूनिट पर 300 से अधिक उपस्कर स्थापित

एक्रिलिक एसिड यूनिट में 300 से अधिक उपस्करों के स्थापित किए जाने के बाद टीम पीडीपीपी यांत्रिक समापन के अंतिम चरण पर पहुँच गई है। अब यूनिट में सभी कॉलम स्थापित किए गए हैं और दो पंपों को छोडकर, बाकी सभी उपस्कर, मई महीने के अंत तक नींव पर स्थापित किए गए हैं ।

यूनिट में सिस्टम वार समापन कार्य भी प्रारंभ हुए हैं । यूटिलिटी लाइनें उत्तरोत्तर हैंडओवर की जा रही हैं और ऑफसाइट लाइनों पर शीतलन जल परिसंचरण प्रारंभ किया गया है । जून में यूनिट बैटरी सीमा तक भाप ब्लोइंग कार्य भी किया जाएगा । पूरी टीम, अगस्त 2019 तक सभी यूनिटों और सुविधाओं के यांत्रिक समापन के विश्वास पर पूर्णतः ऊर्जान्वित है ।

एमएसबीपी पर पीएसए यूनिट के एडसोर्बर स्थापित

मोटर स्पिरिट ब्लॉक परियोजना (एमएसबीपी) कार्यस्थल, तीनों एलएसटीके टीमों और विविध सेवा ठेकेदारों और उप ठेकेदारों के गतिविधियों से गुंजायमान है ।

परियोजना ने 62.5% की समग्र भौतिक प्रगति हासिल की है और जून 2020 तक यांत्रिक समापन अनुसूचित है। एनएचटी/सीसीआर/पेनेक्स एवं शेष यूनिटों का पैकेज काम, पेट्रोफैक इंटरनेशनल यूएई एलएलसी द्वारा किया जा रहा है । 6 सेट एडसोर्बर वेसल, जो सीसीआर में पोलीबेड पीएसए यूनिट का ह्रदय है, 25 मई को अपने अपने नींव पर स्थापित किए गए हैं । पीएसए एडसोर्बर वेसल का हरेक का भार 25 मेट्रिक टन है, जिसका निर्माण मेसर्स एल & टी माड्यूल फैब्रिकेशन फेसिलिटी, हाज़िरा द्वारा किया गया है ।

पीएसए यूनिट, उच्च शुद्धता हाइड्रोजन के उत्पाद धारा के उत्पादन के साथ उच्च हाइड्रोजन रखने वाले फीड गैस को शुद्ध करता है, जो हाइड्रोटीटिंग के लिए उपयोग किया जाता है ।

एमएसबीपी टीम मानसून की शुरुआत से पहले अधिकतम काम पूरा करने के लिए उपस्करों के निर्माण में तेज़ी ला रही है ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी में "फलदायक" हरियाली

पर्यावरण की रक्षा पर प्राथमिकता देते हुए, बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने हमेशा हरी रिफ़ाइनरी बनी रहने के लिए प्रयास किया है । इस प्रयास में और एक कदम आगे बढते हुए, बीपीसीएल हरियाली पहल के भाग के रूप में रिफ़ाइनरी के प्रमुख क्षेत्र में एक फल उद्यान बनाया गया है ।

फल उद्यान का औपचारिक रूप से उद्घाटन, 18 अप्रैल 2019 को श्री प्रसाद के पणिक्कर, कार्यपालक निदेशक (केआर), श्री मुरली माधवन पी, कार्यपालक निदेशक (रिफ़ाइनरी प्रचालन), श्री सुरेश जोण, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना), श्री अजित कुमार के, मुख्य महाप्रबंधक (पोलियॉल एवं बीएस VI), और सतीश कुमार के पी, महाप्रबंधक (बीएस VI परियोजना), वरिष्ठ अधिकारी गण और परियोजना टीम की उपस्थिति में श्री पी एस रामचंद्रन, कार्यपालक निदेशक (परियोजना), कोच्चि रिफ़ाइनरी द्वारा किया गया । पिछले वर्ष के दौरान परियोजना विभाग ने कोच्चि रिफ़ाइनरी के अंदर विभिन्न स्थानों पर कोक यार्ड से डीएचडीएस तक फैले क्षेत्र में 25000 पेड़ लगाए थे ।

इस पहल के भाग के रूप में गुणता नियंत्रण प्रयोगशाला के पूर्व की ओर लगभग 2 एकड़ भूमि विकसित करके लगभग 1400 नं. फल देने वाले पेड लगाए गए हैं । इसमें 650 आम के पेड और 250 चिक्कू के पेड शामिल हैं । यह कोच्चि रिफ़ाइनरी को और भी खूब सूरत बनाने में भी सहायक रहेगा ।

आईआरईपी में वेथर शेल्टर का उद्घाटन

श्री पी एस रामचंद्रन, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) ने श्री जयेश शाह, कार्यपालक निदेशक (एचआर), श्री मुरली माधवन पी, कार्यपालक निदेशक (आर ओ), श्री बाबु जोसफ, मुख्य महाप्रबंधक (एचएसई), श्री मोहनलाल ए, मुख्य महाप्रबंधक (ई&एएस), श्री अजित कुमार के, मुख्य महाप्रबंधक (पोलियॉल एवं बीएस VI), और मात्यु तोमस, महाप्रबंधक (पी&यू) की उपस्थिति में 27 अप्रैल 2019 को फील्ड कार्मिकों के लिए निर्मित वेथर शेल्टर का उद्घाटन किया । इसके उद्घाटन के साथ आईआरईपी यूटिलिटी प्रचालन ग्रुप की एक दीर्घकालीन आवश्यकता, जीटी/ एचआरएसजी-3,4,5 ग्रुप के लिए एक वेथर शेल्टर, पूरी हो गई है । श्री पी एस रामचंद्रन, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) के समर्थन ने यह कार्य पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और कार्यान्वयनाधीन दूसरे विभिन्न बडे कामों के बीच इस वेथर शेल्टर को पूरा करने में मार्गदर्शक शक्ति रहे हैं ।

टीम ने यह भी कहा कि यह बडे भाग्य की बात है कि कार्यपालक निदेशक (परियोजना) ने इस सुविधा का भी उद्घाटन किए हैं क्योंकि यह आईआरईपी से जुडे अवशिष्ट निर्माण कार्यों के पूरा होने का भी प्रतीक है । अनुमोदन की तिथि से बहुत छोटी अवधि में यह सुविधा पूरा करने के लिए टीम ने परियोजना सिविल एवं विद्युत ग्रुपों की भी प्रशंसा की ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी में ब्लैक कैट द्वारा एनएसजी अभ्यास

रिफ़ाइनरी के अंदर सुरक्षा सतर्कता की जाँच करने के लिए कोच्चि रिफ़ाइनरी में 30 अप्रैल 2019 को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड द्वारा वीआईपी बंधक निष्क्रमण अभ्यास किया गया ।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा संचालित एनएसजी मिशन, चार दिनों की अवधि में कोच्चि में कोच्चि रिफ़ाइनरी, सीआईएएल और विशेष आर्थिक ज़ोन जैसे कई संवेदनशील स्थानों पर चलाया गया ।

एनएसजी कमांडो, केरल पुलिस थंडरबाल्ट्स (कमांडो), केरल पुलिस बल, केरल राज्य एफःएस टीम और सीआईएसएफ सहित लगभग 285 वर्दीधारी कर्मियों ने अभ्यास में भाग लिया ।

अभ्यास देखने के लिए उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों में से कुछ हैं : ब्रिगेडियर चिकारा, डीआईजी (एनएसजी), कर्नल नितेश (समीक्षक), कोच्चि सिटी पुलिस कमीशनर, श्री सुरेन्द्रन आईपीएस, डीसीपी, एसीपी, ग्रुप कमाण्डेंट (सीआईएसएफ) । आईआरईपी गेट पर स्टैंडबाई पर केरल दमकल दल फायर ट्रक और चिकित्सा टीम सहित एम्बुलेंस तैयार थे ।

पी&सीएस केंद्रीकृत भांडागार के पास सभा क्षेत्र पर, परिदृश्य संबंधी ब्रीफिंग किया गया । एमसीआर के सामने इंसिडेंट कमाण्ड पोस्ट (आईसीपी) की स्थापना की गई थी। लाइव वीडियो स्ट्रीम की प्राप्ति के लिए प्रशासन भवन के ऊपर एक क्वाड कोप्टर उडाया गया। डॉग स्क्वाड में प्रशिक्षित दो स्निफर डॉग के अतिरिक्त एक बेल्जियन मलिनोयस असोल्ट डॉग भी शामिल था। 30 अप्रैल 2019 से अगले दिन 6.00 बजे तक अनुसूचित अभ्यास के लिए कार्यालय के कमरे भी खोले गए थे ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी में अग्निशमन सेवा दिवस

हर वर्ष 14 अप्रैल को भारत में राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा दिवस के रूप में मनाया जाता है । 14 अप्रैल 1944 को मुंबई पोर्ट के विक्टोरिया डॉक में 150 व्यक्तियों की मृत्यु

और डॉक एवं समीपस्थ सुविधाओं के नाश के कारण बनी अनर्थकारी आग के शमन में अपने जीवन बलि दिए वी अग्निशमन कर्मियों की याद में यह दिवस मनाया जाता है ।

अपने कर्तव्य निष्पादन के दौरान जान खो गए उन वीर अग्निशमन कर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए अप्रैल 14 को शहीद दिवस के रूप में भी मनाया जाता है ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी के मुख्य अग्निशमन केंद्र में कार्यक्रम के दौरान श्री सुब्रमणि अय्यर, मुख्य महाप्रबंधक (प्रचालन एवं कमीशनिंग) ने उपस्थित कर्मचारियों से अनुरोध किया कि आग निवारण में अपने योगदान के ज़रिए, प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन कार्यकलापों में अपनी भागीदारिता और यथा अपेक्षित अग्निशमन कर्मियों को आवश्यक समर्थन प्रदान करके आग से संरक्षा के उद्देश्य की तरफ़ इस अवसर पर हम अपने आप को पुनः समर्पित करें ।

श्री अरुण कुमार दास, महाप्रबंधक (एफ&एस) ने उपस्थितों का स्वागत किया और श्री तुषारकान्त साहू ने फायरमैन की प्रार्थना पढी । वरिष्ठ अग्निशामक, श्री राजा के नायर ने भी इस अवसर पर भाषण दिया ।

अग्निशमन सेवा दिवस के सिलसिले में एचटीएफ, पुतुवाइपिन में भी कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

सीडीयू ।। में पीसीएम सफलतापूर्वक कार्यान्वित

पीएसएम (ओएसएचए/सीसीपीएस) के 17 तत्वों के कार्यान्वयन हेतु अपनी यात्रा के हिस्से के रूप में अक्तूबर 2017 को दो चरणों में कार्यान्वयन हेतु सीडीयू ।। में कार्य प्रारंभ किया गया था ।

हमें यह घोषित करते हुए गर्व है कि सीडीयू ।। टीम ने अनुसूचित समय के अंतर्गत सभी 17 तत्वों का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन किया है । कर्मचारियों द्वारा प्रदर्शित पूरे दिल से भागीदारी और श्रेष्ठ टीम कार्य ने यह साबित किया है कि पीएसएम के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है कर्मचारी भागीदारी ।

17 तत्वों के कार्यान्वयन के बाद आयोजित लेखापरीक्षा ने यह संकेत किया कि गैप मूल्यांकन के दौरान 57 प्रतिशत का प्रारंभिक स्कोर, 68 प्रतिशत के कुल स्कोर तक बढ गया है । प्रथम चरण में कार्यान्वित प्रथ दस तत्वों का स्कोर, 74 प्रतिशत तक बढ गया। बीपीसीएल केआर में पीएसएम कार्यान्वयन पूरा करने के प्रथम यूनिट होने के नाते पूरे सीडीयू ।। टीम को बधाइयाँ !

वास्तव में वे गर्व से कह सकते हैं- हम हैं सबसे पहले ! और पूरी रिफ़ाइनरी में भविष्य में कार्यान्वयन के लिए मशाल वाहक बन सकते हैं । प्रथम चरण के दौरान सीडीयू क्ष् में कार्यान्वित दस तत्व, पूरी रिफ़ाइनरी में कार्यान्वित किए गए हैं और बाकी सात तत्व, दिसंबर 2019 तक कार्यान्वित किए जाएंगे ।

पूरी सीडीयू ।। टीम और उसके निष्पादन सहभागियों को इस प्रमुख मीलपत्थर पार करने के लिए श्री बाबु जोसफ, मुख्य महाप्रबंधक (एचएसई) और दूसरे वरिष्ठ कार्यपालकों की उपस्थिति में श्री मुरली माधवन, कार्यपालक निदेशक (रिफ़ाइनरी प्रचालन) द्वारा अभिनंदन किया गया ।

नियम 1 : संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारंभ

1.1 इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा नियम, 1976 है ।

1.2 इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय संपूर्ण भारत पर है ।

1.3 ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

नियम 2 : परिभाषाएं

क्षेत्र कः 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है ।

क्षेत्र खः 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है ।

क्षेत्र गः 'क्षेत्र ग' से ऊपर निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र, यानी आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोआ, जम्मु ः कशमीर, कर्नाटक, केरल, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, ओडिशा, सिक्किम, त्रिपुरा, तमिल नाडु, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल राज्य तथा पुदुश्शेरि और लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है ।

नियम 3 : राज्यों आदि और केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि

क्षेत्र क और ख : हिंदी ; क्षेत्र ग : अंग्रेज़ी

नियम 4 : केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि

(वार्षिक कार्यक्रम के माध्यम से हरेक वर्ष लक्ष्यांक निर्धारित किए जाते हैं)

क्षेत्र क ⟷ क्षेत्र ख : 100%

क्षेत्र क → क्षेत्र क & क्षेत्र ख → क्षेत्र ख : 100 %

क्षेत्र ग → क्षेत्र क, ख, ग : 55%

नियम 5 : हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर

हिंदी में पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे ।

नियम 6 : धारा 3(3) का अनुपालन

धारा 3 (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों। के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेज़ें हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं ओर जारी की जाती हैं ।

धारा 3 (3) में निर्दिष्ट दस्तावेज़ : संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य रिर्पा, प्रेस विज्ञप्ति, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञापत्र, सूचना, निविदा प्ररूप, अखिल भारतीय स्तर के विज्ञापन, संसद के समक्ष रखे गए प्रशासनिक कागज़-पत्र

नियम 7 : आवेदन, अभ्यावेदन आदि

कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेज़ी में कर सकता है । आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में किया गया हो या उस पर हिंदी हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा ।

नियम 8 : केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेज़ी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें ।
2. केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज़ के अंग्रेज़ी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं ।
3. केंद्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहाँ ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा ।

नियम 9 : हिंदी में प्रवीणता

नियम 10 : हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान

नियम 10(4): केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे ।

नियम 11: मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य,लेखन सामग्री आदि

मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक, सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेज़ी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी ।

नियम 12 : अनुपालन का उत्तरदायित्व

प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है ।

"हिंदी हमें जान से प्यारी
देवनागरी सबसे न्यारी
महके हिंदी की फुलवारी
सदा रहे इसकी हरियाली"

"हिंदी है भारत की पहचान
हिंदी है हमारी
संस्कृति की पहचान"

"हिंदी का करो प्रयोग,
प्रगति में दो सहयोग"

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी में हिंदी पखवाडा समारोह

हिंदी प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विभाग के लिए चल ट्रोफी प्राप्त करते हुए विनिर्माण टीम

19 सितंबर को आयोजित कोच्चि रिफ़ाइनरी के हिंदी पखवाडा समापन समारोह में कर्मचरियों को हिंदी अपनाने को प्रेरणा देते हुए अध्यक्षीय भाषण में श्री जयेश शाह कार्यपलक निदेशक मानव संसाधन ने कहा "सरकार की राजभाषा नीति, प्रेरणा और प्रोत्साहन से हिंदी के विकास और प्रसार करने की है । हिंदी पखवाडा समारोह के आयोजन का मुख्य उद्देश्य है कि कर्मचारियों को राजभाषा में काम करने को प्रेरित करना। हमारे निगम ने हिंदी के प्रयोग को बढावा देने के लिए बहुत-सी प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं । आप से अनुरोध है कि अपने काम में सरल हिंदी का उपयोग करें और इन प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ उठाएं । वैसे, आज हमें मुंबई या दिल्ली जाने के लिए ही नहीं, बल्कि, यहाँ कोच्चि रिफ़ाइनरी में ही काम करने के लिए, तथा, केरल में रहने के लिए तक हिंदी की जानकारी ज़रूरी बन गई है। इसीलिए आज हिंदी सीखने के लिए सभी में जोश बढ गया है।" उन्होंने अपने भाषण में विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाईयाँ दी ।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि, श्री पी एस रामचंद्रन, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) ने अपने वक्तव्य में उपस्थित विभागाध्यक्षों और हिंदी प्रेमियों से अनुरोध किया कि वे अपने रोज़मर्रा के कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग करें । उन्होंने यह भी कहा कि "हिंदी बहुत ही सरल ही नहीं, यह जन-जन की भाषा है । इसलिए इसे अपनाने में हमें हिचकना नहीं चाहिए ।"

उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए । हिंदी पखवाडे के दौरान कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विभाग के लिए स्थापित चल ट्रोफी, श्री जयेश शाह, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) के हाथों से श्री मुरली माधवन पी, मुख्य महाप्रबंधक (प्रचालन), श्री श्रीकुमार आर, महाप्रबंधक (विनिर्माण रिफ़ाइनरी I), श्री मात्यूस एम जोण, महाप्रबंधक (विनिर्माण रिफ़ाइनरी II), और विनिर्माण विभाग की टीम ने मिलकर प्राप्त की ।

1 से 14 सितंबर के दौरान कर्मचारियों के लिए विविध प्रतियोगिताओं और जागरूकता संदेश के साथ हिंदी पखवाडा आयोजित किया गया । इस वर्ष कोच्चि रिफ़ाइनरी में हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान हिंदी कविता लेखन, प्रशासनिक शब्दावली एवं अनुवाद, बोलती तस्वीर, अंताक्षरी, प्रश्नोत्तरी, ललितगान (महिला एवं पुरुष के लिए अलग अलग), वृंद गान जैसी प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त, कर्मचारियों के लिए ऑन-द-स्पोट प्रश्नोत्तरी, डम्ब शराड, समाचार वाचन जैसी प्रतियोगिताएं भी अयोजित की गयीं। सभी प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता ने कोच्चि रिफ़ाइनरी के हिंदी पखवाडा समारोह को सफल बनाया। ऑन-द-स्पोट प्रश्नोत्तरी और समाचार वाचन प्रतियोगिताएं, कर्मचारियों के सामान्य हिंदी ज्ञान बढाने और हिंदी को अपनाने की हिचक दूर करने के उद्देश्य से चलायी गई । इन प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों की बडी मात्रा में भागीदारी रही ।

श्रीमती वी आर गिरिजा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कोच्चि रिफ़ाइनरी के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों पर वर्ष 2018 की रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री ए एन विजयन, सहायक प्रबंधक (वित्त), राजभाषा समन्वयक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। हिंदी पखवाडे के दौरान आयोजित सुगम संगीत प्रतियोगिताओं के विजेताओं ने अपना पुरस्कार प्राप्त गाना प्रस्तुत किया । राष्ट्रगीत के साथ हिंदी पखवाडा-2018 का समापन हुआ ।

भाषण देते हुए अध्यक्ष, श्री जयेश शाह, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

हिंदी पखवाडा समापन समारोह के दर्शक

कोच्चि रिफ़ाइनरी में हिंदी पखवाडे के सिलसिले में कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

कविता रचना :

प्रथम : एन्टणी सोलमन, एचआर
द्वितीय : उमादेवी वी एन, पी&सीएस
तृतीय : निशांत सी, परियोजना
सांत्वना: कोमल देवांगन, विनिर्माण

प्रशासनिक शब्दावली :

प्रथम : उमादेवी वी एन, पी&सीएस
द्वितीय : रामचंद्रन एन, परियोजना
तृतीय : दुर्गा प्रिया जी, पी&सीएस
सांत्वना : बी मोहन्ती, अनुरक्षण

बोलती तस्वीर:

प्रथम : दुर्गा प्रिया जी, पी&सीएस
द्वितीय : निशांत सी, परियोजना
तृतीय : अनु अप्पुकुट्टन, परियोजना
सांत्वना : अंशु शालिनी, एचआर

डम्ब शराड :

प्रथम : दृष्टि शर्मा, विनिर्माण
तनुस्मिता दास, विनिर्माण
द्वितीय : कोमल देवांगन
अमित लिमाए, विनिर्माण
तृतीय : नंदकिशोर, एफ&एस
श्रीकांत बी आर, विनिर्माण
सांत्वना : अनु अप्पुकुट्टन, परियोजना
दुर्गा प्रिया जी, पी&सीएस

समाचार वाचन :

प्रथम : अनु अप्पुकुट्टन, परियोजना
द्वितीय : मोहम्मद अज़रुद्दीन, अनुरक्षण
तृतीय : सुरेश कुमार आर, पी& सीएस
सांत्वना : अंशु शालिनी, एचआर

प्रश्नोत्तरी :

प्रथम : विघ्नेश शिवा, विनिर्माण
अर्जुन आनंद, ओएम&एस
द्वितीय : निशांत सी, परियोजना
सुरेश कुमार आर, पी&सीएस
तृतीय : दृष्टि शर्मा, विनिर्माण
तनुस्मिता दास, विनिर्माण
सांत्वना : पी भट्टाचार्य & बी मोहन्ती, अनुरक्षण

अंताक्षरी :

प्रथम : अनु अप्पुकुट्टन, परियोजना
दुर्गा प्रिया जी, पी&सीएस
द्वितीय : नयनिका पणिक्कर
पूजा बालिगा, विनिर्माण
तृतीय : पी भट्टाचार्य
रितेश एच, अनुरक्षण
सांत्वना : एल हर्षकुमार
रवि वघेला, विनिर्माण

ललित गान (महिला) :

प्रथम : अनु अप्पुकुट्टन, परियोजना
द्वितीय : अश्वति कार्तिकेयन, एचआर
तृतीय : दुर्गा प्रिया जी, पी&सीएस
सांत्वना : नयनिका पणिक्कर, विनिर्माण

ललित गान (पुरुष) :

प्रथम : प्रशांत टी, परियोजना
द्वितीय : रामचंद्रन एन, परियोजना
तृतीय : पी भट्टाचार्य, अनुरक्षण
सांत्वना : मणि एम टी, पी&यू

वृंद गान :

प्रथम : अश्वति के & टीम
द्वितीय : एच सी एम गौड & टीम
तृतीय : आरति & टीम
सांत्वना : तनुस्मिता दास & टीम

हिंदी पखवाडा समापन समारोह में पुरस्कार प्राप्त करते हुए कोच्चि रिफ़ाइनरी के विजेता

संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह : बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी को समग्र चैम्पियनशिप ट्रोफी

कोच्चि स्थित सरकारी उपक्रमों के लिए कोच्ची नराभाकास द्वारा आयोजित विविध हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिकतम अंक प्राप्त करके समग्र चैम्पियनशिप ट्रोफी (प्रथम पुरस्कार) बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने जीता है ।

श्री जोर्ज तोमस, महाप्रबंधक (जनसंपर्क एवं प्रशासन) और कोच्चि रिफ़ाइनरी टीम ने दिनांक 18.03.2019 को बीएसएनएल भवन, एरणाकुलम में आयोजित कार्यक्रम में डॉ आर शशिधरन, कुलपति, कोचिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्चि के करकमलों से यह समग्र चैम्पियनशिप ट्रोफी प्राप्त की ।

कोच्चि स्थित विविध सरकारी उपक्रमों के कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया था ।

संयुक्त हिंदी पखवाडे के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में कोच्चि रिफ़ाइनरी के निम्नलिखित कर्मचारियों ने पुरस्कार जीते :

क्रम सं.	कर्मचारी का नाम	विभाग	प्रतियोगिता	पुरस्कार
1	उमादेवी वी एन	पी&सीएस	अनुवाद प्रशासनिक शब्दावली	प्रथम तृतीय
2	दुर्गा प्रिया जी	पी&सीएस	अंताक्षरी अनुवाद	प्रथम सांत्वना
3	अनु अप्पुकुट्टन	परियोजना	अंताक्षरी	प्रथम
4	विजयकुमार एस आर	सलाहकारी सेवा	हिंदी टंकण	प्रथम
5	विघ्नेश शिवा	विनिर्माण	प्रश्नोत्तरी	प्रथम
6	निशांत सी	परियोजना	प्रश्नोत्तरी सुलेख कविता लेखन	प्रथम तृतीय तृतीय

विजेताओं को बधाइयाँ !

संयुक्त हिंदी पखवाडा समरोह 2018 के विजेता बीएसनएल भवन, एरणाकुलम में आयोजित समारोह में मंचस्थ हस्तियों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए

कोच्चि रिफ़ाइनरी राजभाषा समन्वयक सम्मेलन

राजभषा समन्वयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री जयेश शाह, कार्यपालक निदेशक (एसआर)

कोच्चि रिफ़ाइनरी के राजभाषा कार्यान्वयन कार्यकलापों के भाग के रूप में दिनांक 18 दिसंबर 2018 को रमदा रिसोर्ट, कुम्बलम में कोच्चि रिफ़ाइनरी राजभाषा समन्वयक बैठक आयोजित किया गया । राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्यों, राजभाषा समन्वयकों और राजभाषा क्लब सदस्यों के बीच विचारों के आदान प्रदान में मदद करने और कोच्चि रिफ़ाइनरी में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन में तालमेल लाने के उद्देश्य से यह बैठक आयोजित किया गया। कोच्चि रिफ़ाइनरी के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, राजभाषा समन्वयकों और राजभाषा क्लब सदस्यों ने इस बैठक में भाग लिया ।

श्रीमती गिरिजा वी आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने स्वागत भाषण दिया । श्री जयेश शाह, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) ने बैठक का परंपरागत दीया जलाकर उद्घाटन किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि भारत के संविधान ने हम सबके ऊपर अपने कार्यालयों में राजभाषा नियमों के अनुपालन का दायित्व डाला है । उन्होंने इस पर ज़ोर दिया कि राजभाषा समन्वयक होने के नाते यह भी उनका दायित्व है कि उनके विभागों में राजभाषा नियमों के अनुपालन सुनिश्चित करने में राजभाषा अनुभाग की सहायता करना । इस लिए उन्होंने राजभाषा समन्वयकों से अनुरोध किया कि वे अपने विभाग में राजभाषा अनुभाग की आँख और हाथ का काम भी करें । उन्होंने यह भी सूचित किया कि कई ऐसी परियोजनाएं चालू हैं, जिसके भाग बनकर विविध परामर्शदाता, ठेकेदार और कामगार हमारे यहाँ आए हुए हैं और हम से जुडे हुए हैं । तो हम सब पर अपने हर कार्यक्षेत्र में हिंदी के उपयोग का प्रचार करने की एक सख्त ज़रूरत आ पडी है, ताकि वे भी कोच्चि रिफ़ाइनरी में अपने घर का जैसा माहौल महसूस करें और इसके साथ जुड जाने में मदद मिलें । उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कोच्चि रिफ़ाइनरी के कर्मचारी, हिंदी बोलने के काबिल है, बस हिंदी में बोलने की अपनी हिचक दूर करने पर हिंदी में बातें करने की आदत अपने आप आ जाएगी ।

श्री पी एस रामचंद्रन, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) ने अपने आशीर्वचन में परियोजना विभाग में होने वाले हिंदी काम की मात्रा पर प्रकाश डालकर बाकी विभागों को भी हिंदी में काम करने की राह दिखाया । आगे उन्होंने राजभाषा समन्वयकों से अनुरोध किया कि वे अपने दैनंदिन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके एवं स्वयं हिंदी में काम कर के उदाहरण प्रस्तुत करें और अपने विभाग के कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की तथा निगम की प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ उठाने की प्रेरणा दें ।

श्रीमती षीला एम सी, सचिव, कोच्चि नराभाकास एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), बीएसएनएल और श्रीमती सुषमा जाधव, वरिष्ठ प्रबंधक (हिंदी) निगमित ने आशीर्वाद भाषण दिया । श्रीमती षीला एम सी, सचिव, कोच्चि नराभाकास ने अपने, भाषण में भारत सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन और राजभाषा हिंदी में प्रशंसनीय काम और बेहत्तर राजभाषा कार्यान्वयन की तरफ़ नवीन कदम उठाने के लिए कोच्चि रिफ़ाइनरी को हार्दिक बधाई दी । श्रीमती सुषमा जाधव, उप महाप्रबंधक (हिंदी), कॉर्पोरेट ने अपने भाषण में कॉर्पोरेट स्तर पर प्रचलित विविध राजभाषा कार्यान्वयन कार्यकलापों पर प्रकाश डालते हुए कोच्चि रिफ़ाइनरी के क्रियाकलापों को और ज़ोर से जारी रखने की सलाह दी ।

श्री गोपालकृष्णन वी, प्रचालन विभाग, श्री शंकरनारायणन पी, पी&सीएस विभाग, श्रीमती एलिज़बेथ डेविस, एचआर विभाग, श्रीमती अनु अप्पुकुट्टन, परियोजना विभाग, श्री निशांत चौबे, विनिर्माण विभाग, श्री मोहम्मद निज़ार, एचआर विभाग, श्रीमती दुर्गा प्रिया, पी&सीएस विभाग और श्री एन्टणी सोलमन, संपदा विभाग को कोच्चि रिफ़ाइनरी के श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन में उनके अंशदान के लिए प्रमाणपत्र प्रदान करके उनका अभिनंदन किया गया ।

प्रथम सत्र, श्रीमती षीला एम सी, सचिव, कोच्चि टोलिक (सरकारी उपक्रम) एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), बीएसएनएल का रहा, जिसका विषय था, "राजभाषा के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी" । और श्रीमती सुषमा जाधव, उप महाप्रबंधक (हिंदी) निगमित, बीपीसीएल ने "राजभाषा समन्वयकों के कर्तव्य एवं भूमिका" पर एक सत्र चलाया । उन्होंने राजभाषा समन्वयकों को सूचित किया कि वे अपने अपने विभागों में राजभाषा अनुभाग के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेंगे और निर्धारित समय में माँगी गई जानकारी / रिपोर्ट आदि राजभाषा अनुभाग को प्रस्तुत करेंगे ।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अपने विभाग में, राजभाषा अधिनियम एवं नियम के प्रावधानों से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समय समय पर अवगत कराने के अतिरिक्त विविध अवसरों पर बनाए जाने वाले बैनर हिंदी में भी बनवाना, सभी स्टेशनरी सामग्री, लिफाफे, पत्र शीर्ष, सूचना पट्ट, नामपट्ट, रबड स्टैम्प द्विभाषी हैं तथा भविष्य में बनायी जानेवाली नई सामग्री द्विभाषी बनाने की बात सुनिश्चित करना, फाइलों पर नाम, विषय हिंदी और अंग्रेज़ी में लिखवाना, रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ हिंदी में करने केलिए स्टाफ को प्रोत्साहित करना, हिंदी पत्राचार बढाने के लिए अधिक से अधिक पत्रों को मानक पत्र में परिवर्तित करना तथा पत्र लिखने के लिए स्टाफ को प्रोत्साहित करना, पत्रों पर टिप्पणियाँ हिंदी में ही लिखने के लिए स्टाफ को प्रोत्साहित करना और विभाग के हरेक अधिकारी/कर्मचारी का हिंदी कार्यान्वयन में किसी न किसी रूप में सहभाग निश्चित करना भी उनका कर्त्तव्य है ।

दोपहर के बाद श्री अनिल कुमार के, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, तिरुवनन्तपुरम ने राजभाषा समन्वयकों के साथ अपना अमूल्य अनुभव बाँटते हुए उनके मार्गदर्शन के साथ साथ "यूनिकोड, हिंदी सीखने, अनुवाद करने एवं टंकण के लिए हिंदी एप्लिकेशन" पर एक इंटरएक्टीव सत्र चलाया ।

भागीदारों के लिए राजभाषा समन्वयक और राजभाषा क्लब सदस्य के रूप में अपने उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए तीनों सत्र बहुत ही उपयोगी रहे ।

बीपीसीएल केआर रामाकास सदस्य और राजभाषा समन्वयक, संकाय सदस्यों के साथ

हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी, अपने कर्मचारियों को हिंदी के प्रति आकर्षित करने और हिंदी में काम करना रोचक बनाने के उद्देश्य से अपने कर्मचारियों के लिए बहुत ही दिलचस्प और समावेशी प्रतियोगिताएं चलाती रही है । इस वर्ष ऑन-द-स्पोट प्रश्नोत्तरी, लिखित हिंदी प्रश्नोत्तरी, फोन-इन प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताएं, वर्ष के दौरान आयोजित की गई ।

यह प्रतियोगिता चलाने के लिए राजभाषा अनुभाग के कर्मचारी कोच्चि रिफ़ाइनरी के हरेक विभाग/अनुभाग, संयंत्र के नियंत्रण कक्ष आदि में प्रत्येक दिन कार्यालयीन घंटों के दौरान जाकर, कार्यालयीन एवं सामान्य हिंदी संबंधी प्रश्न पूछकर सही उत्तर देनेवालों को तत्काल पुरस्कार प्रदान किया गया । वर्ष के दौरान की प्रतियोगिताओं में सही उत्तर देकर विजयी बने 120 कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

इन प्रतियोगिताओं की सबसे बडी खूबी यह है कि खास समय या स्थान की पाबंदी न होने के कारण प्लांट की अपनी ड्यूटी स्थान छोडकर न आ पानेवाले कर्मचारी, पारी कर्मचारी आदि भी इनमें भाग लेकर पुरस्कार जीत सकते हैं । इसी कारण से तकनीकी विभागों से बडी मात्रा में कर्मचारी इसमें भाग ले सके ।

सभी स्तर के कर्मचारियों के इस प्रतियोगिता की तरफ़ प्रतिक्रिया देखकर यह स्पष्ट है कि कर्मचारियों को हिंदी अपनाने को प्रेरित करने और इनके सामान्य हिंदी का ज्ञान आंकने और हिंदी की तरफ़ आकर्षिक करने के लिए सबसे असरदार और रोचक प्रतियोगिताओं में एक यही है ।

विश्व हिंदी दिवस समारोह -2019

विश्व हिंदी दिवस प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को पूरे विश्व में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है ।

भाषा किसी भी देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं दार्शनिक पहलुओं को जानने, समझने का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है । कोई भी देश अपनी भाषा के बिना सामाजिक, पारंपरिक एवं साहित्यिक धरोहर को सहेज कर नहीं रख सकता । भाषा देश की सभ्यता एवं संस्कृति की संवाहक होती है । हिंदी ने अपनी मौलिकता, एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है । हिंदी ने ही संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर जागृत करते रखा है ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी में भी निम्नलिखित कार्यक्रमों के साथ विश्व हिंदी दिवस समुचित रूप में मनाया गया :

1. सभी कर्मचारियों के लिए हिंदी कहानी, हिंदी कविता लेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं चलायी गई ।

2. हिंदी के प्रचार को दृष्टि में रखते हुए, विश्व हिंदी दिवस संबंधी संदेश कंपनी के विविध क्षेत्रों में डिजिटल प्रदर्शन बोर्ड पर प्रदर्शित किया गया ।

3. विश्व हिंदी दिवस का महत्व स्पष्ट करते हुए कर्मचारियों से राजभाषा के रुप में हिंदी को अपनाकर, कार्यालय में हिंदी का उपयोग बढाने के अनुरोध के साथ सब कर्मचारियों के सूचना दी गयी

"हिंदी हमारी शान है
देश का अभिमान है"

हिंदी कार्यशाला

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी, राजभाषा हिंदी को बढावा देने एवं राजभाषा कार्यान्वयन को सार्थक बनाने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित करती आ रही है । इस तरफ़ अपने सतत प्रयासों को ज़ारी रखते हुए कोच्चि रिफ़ाइनरी हर तिमाही में हिंदी में कार्यासाधक ज्ञान रखने वाले अपने अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाएं आयोजित करती है । इन कार्यशालाओं में अपना अनुभव कर्मचारियों को बांटने और कार्यालय में हिंदी में काम करने की राह दिखाने के लिए संकाय के रूप में विभिन्न केंद्र सरकार कार्यालयों एवं बैंकों के अनुभवी राजभाषा प्रबंधकों / राजभाषा अधिकारियों को आमंत्रित किए जाते हैं ।

इसी सिलसिले में विविध संवर्ग के कर्मचारियों के लिए वर्ष के दौरान, 22 जून 2018, 03 अगस्त 2018, 03 सितंबर 2018, 18 दिसंबर 2018 और 07 मार्च 2019 को हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं ।

दो सत्रों में चलाई गई इन कार्यशालाओं में कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता, सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा नियम और अधिनियम, हिंदी व्याकरण, इंटरनेट के ज़रिए हिंदी में काम, कंप्यूटरों के द्विभाषी प्रचालन आदि के बारे में कर्मचारियों को समझाया गया ।

कार्यशाला में टिप्पण एवं आलेखन और कार्यालयीन काम के दौरान कंप्यूटरों पर द्विभाषी रूप में काम करने पर कर्मचारियों को अभ्यास कराया गया। कार्यालयीन कामकाज में टिप्पण एवं आलेखन हिंदी में की जाने की महत्ता एवं अनिवार्यता प्रतिभागियों को समझायी गई। सत्र, मात्र कक्षा तक सीमित न रहकर, आपसी मेल मिलाप के भी रहे, जिनमें से प्रतिभागियों ने कई नई जानकारी प्राप्त की और अपनी शंकाएं दूर करके हिंदी का ज्ञान ताज़ा कर दिया ।

कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन काम में हिंदी के उपयोग करने में मदद देने के लिए सहायक सामग्री भी कार्यशाला में प्रदान की गयी । कार्यशाला के अंत में सब प्रतिभागी इससे एकमत रहे कि इस प्रकार की कार्यशालाएं हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान बढाने में सहायक रहेंगी और कार्यालयीन काम में हिंदी के सफल प्रयोग में सहायक रहेंगी ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी को राजभाषा रोलिंग ट्रोफी

कोच्चि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा कोच्चि स्थित सरकारी उपक्रमों के लिए श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए संस्थापित राजभाषा रोलिंग ट्रोफी (प्रथम पुरस्कार), वर्ष 2017-18 के लिए बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने जीती है । कोच्चि नराभाकास, हर वर्ष सदस्य संगठनों के राजभाषा कार्यान्वयन का मूल्यांकन करके श्रेष्ठ राजभाषा निष्पादन के लिए राजभाषा रोलिंग ट्रोफी प्रदान करती आ रही है ।

दिनांक 18.03.2019 को बीएसएनएल भवन, एरणाकुलम में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्री जोर्ज तोमस, महाप्रबंधक (जनसंपर्क एवं प्रशासन), कोच्चि रिफ़ाइनरी ने राजभाषा रोलिंग ट्रोफी और श्रीमती गिरिजा वी आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), कोच्चि रिफ़ाइनरी ने प्रमाण पत्र, डॉ आर शशिधरन, कुलपति, कोचिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्चि से स्वीकार किया । डॉ के फॉसिस जेकब, प्रधान महाप्रबंधक, बीएसएनएल, कोच्चि और डॉ पी नारायणनकुट्टि, कार्यपालक निदेशक, एचओसी लिमिटेड भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं ।

कोच्चि रिफ़ाइनरी द्वारा तैयार नवीन राजभाषा प्रचार सामग्रियाँ

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी, नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक कदमों के ज़रिए राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में हमेशा से अपनी भूमिका निभाती आयी है ।

यह सिलसिला जारी रखते हुए कोच्चि रिफ़ाइनरी ने अपने राजभाषा कार्यान्वयन कार्यकलापों के भाग के रूप में इस वर्ष भी कई नए राजभाषा प्रचार कदम उठाए हैं । इनमें से कुछ हैं, द्विभाषी नेमी टिप्पणियाँ अंकित लेखन पुस्तिकाएं और बुकमार्कर, प्रेरणादायक हिंदी प्रचार संदेश अंकित स्टिकर, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी लक्ष्यांक अंकित किए लेखन पुस्तिकाएं आदि ।

अधिकारी गण द्वारा नेमी रूप से उपयोग किए जाने वाले टिप्पणियाँ शामिल करके आकर्षक लेखन पुस्तिकाएं तैयार करके सभी विभागों में वितरित किया गया है ताकि वे ज्यादा से ज्यादा हिंदी टिप्पणियों का प्रयोग करें । सभी वर्ग के कर्मचारी, अपने काम के अनुरूप के टिप्पण शामिल पुस्तिका तत्काल संदर्भ के लिए पाकर, अपने काम में हिंदी का उपयोग अधिक कर पा रहे हैं ।

हिंदी के प्रति सकारात्मक भावना बनाए रखने और उन्हें हिंदी में काम करने को प्रेरित करने एवं एक अनुकूल वातावरण पैदा के लिए प्रेरणादायक हिंदी प्रचार संदेश अंकित स्टिकर तैयार करके रिफ़ाइनरी के विविध स्थानों पर प्रदर्शित किए गए हैं, कार्यालय के विविध क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक प्रदर्शन बोर्ड में हिंदी शब्द, उसके समानार्थी अंग्रेज़ी शब्द और उच्चारण, अपनी समतुल्य अंग्रेज़ी लोकोक्ति के साथ हिंदी लोकोक्ति, "आज का सुविचार" भी प्रदर्शित की जाती है ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी की पोलियॉल पेट्रोकेमिकल परियोजना

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी एक परिचय

भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) की एक स्ट्रैटेजिक बिज़नेस यूनिट (एसबीयू), बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी की क्रूड ऑयल परिशोधन क्षमता 15.5 एमएमटीपीए है और इसके प्रमुख उत्पादों में एलपीजी, मोटर स्पिरिट, नाफ्था, विमानन टर्बाइन ईंधन, मिट्टी का तेल, विशेष क्वथनांक स्पिरिट (एसबीपीएस), मिनरल टरपनटाइन ऑयल (एमटीओ), हाई स्पीड डीज़ल, लाइट डीजल ऑयल, भट्टी का तेल, एलएसएचएस, बिटुमेन, प्राकृतिक रबड़ आशोधित बिटुमेन, बेंज़ीन और टॉलुईन जैसे अरोमैटिक उत्पाद और प्रोपिलीन जैसे पेट्रोकेमिकल शामिल है ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी केरल राज्य के एरणाकुलम जिले में अम्बलमुगल में स्थित है। यह कंपनी, भारत सरकार, फिलिप्स पेट्रोलियम, यूएसए और डंकन ब्रदर्स की संयुक्त उद्यम कंपनी के रूप में वर्ष 1963 में निगमित की गई थी और इसकी शोधन क्षमता 2.5 एमएमटीपीए थी। वर्ष 1969 में डंकन ब्रदर्स ने अपने शेयरों का विनिवेश किया और नवंबर 1988 में फिलिप्स पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन ने अपनी समूची शेयरधारिता का विनिवेश कर दिया था । बाद में भारत सरकार ने अपनी संपूर्ण शेयरधारिता का भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के पक्ष में विनिवेश कर दिया और अगस्त 21, 2006 को कोच्चि रिफ़ाइनरी का विलयन बीपीसीएल के साथ हो गया ।

कमीशन होने की तारीख से अब तक रिफ़ाइनरी का काफी प्रमुख विस्तार किए गए, जो हैं : शोधन क्षमता में वृद्धि, सहायक संसाधन यूनिट जैसे एफसीसीयू, अरोमैटिक्स रिकावरी यूनिट, ईंधन गैस विगंधकन यूनिट, डीज़ल हाइड्रो विगंधकन यूनिट, क्षमता विकास एवं आधुनिकीकरण परियोजना, एकीकृत रिफ़ाइनरी विकास परियोजना आदि ।

बीपीसीएल की एकीकृत रिफ़ाइनरी विकास परियोजना (आईआरईपी) के जरिए रिफ़ाइनरी की क्षमता विकास एवं आधुनिकीकरण का काम पूरा हो गया है । सभी संसाधन इकाइयाँ और संबद्ध ऑफ-साइट तथा यूटिलिटी संयंत्रों का स्थिरीकरण हो चुका है और प्रचालनाधीन हैं ।

बीपीसीएल पेट्रोकेमिकल पहल

प्रोपिलीन डेरिवेटीव पेट्रोकेमिकल परियोजना (पीडीपीपी) का कार्यान्वयन, जो पेट्रोकेमिकल क्षेत्र में बीपीसीएल के प्रवेश का सूचक है, तेज़ गति से प्रगति कर रहा है । परियोजना का फीड स्टॉक, पॉलिमर ग्रेड प्रोपिलीन का उत्पादन पेट्रो-एफसीसीयू यूनिट से किया जाता है । और उत्पाद पोर्टफोलियो में एक्रिलिक एसिड, ऑक्सो एल्कहोल और एक्रिलेट्स शामिल है । इन पेट्रोकेमिलों का उपयोग, पेइंट, जल उपचार रसायन, डिटर्जेंट एड्हेसीव, सीलेंट, विलायक, प्लास्टिसाइज़र आदि के निर्माण में किया जाता है ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने पॉली ईथर पोलियॉल, प्रोपिलीन ग्लाइकोल और मोनो एथिलीन ग्लाइकॉल के उत्पादन के लिए अपने दूसरे पेट्रोकेमिकल परिसर की स्थापना के लिए एक और बडी परियोजना शुरू की है । यह पोलियॉल काम्प्लेक्स, वर्ष 2023 तक पूर्णतः प्रचालनाधीन हो जाने की उम्मीद है ।

बीपीसीएल पेट्रोकेमिकल पहल

प्रोपिलीन डेरिवेटीव पेट्रोकेमिकल परियोजना (पीडीपीपी) का कार्यान्वयन, जो पेट्रोकेमिकल क्षेत्र में बीपीसीएल के प्रवेश का सूचक है, तेज़ गति से प्रगति कर रहा है । परियोजना का फीड स्टॉक, पॉलिमर ग्रेड प्रोपिलीन का उत्पादन पेट्रो-एफसीसीयू यूनिट से किया जाता है । और उत्पाद पोर्टफोलियो में एक्रिलिक एसिड, ऑक्सो एल्कहोल और एक्रिलेट्स शामिल है । इन पेट्रोकेमिलों का उपयोग, पेइंट, जल उपचार रसायन, डिटर्जेंट, एड्हेसीव, सीलेंट, विलायक, प्लास्टिसाइज़र आदि के निर्माण में किया जाता है ।

बीपीसीएल कोच्चि रिफ़ाइनरी ने पॉली ईथर पोलियॉल, प्रोपिलीन ग्लाइकोल और मोनो एथिलीन ग्लाइकॉल के उत्पादन के लिए अपने दूसरे पेट्रोकेमिकल परिसर की स्थापना के लिए एक और बडी परियोजना शुरू की है । यह पोलियॉल काम्प्लेक्स, वर्ष 2023 तक पूर्णतः प्रचालनाधीन हो जाने की उम्मीद है ।

पोलियॉल पेट्रोकेमिकल परियोजना परिचय

भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने कोच्चि में प्रारंभ पोलियॉल पेट्रोकेमिकल काम्प्लेक्स स्थापित करने का निर्णय लिया है और काम चालू है । यह परियोजना, निम्नलिखित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रति वर्ष 250 केटी पोलिमर ग्रेड प्रोपिलीन का उपयोग करती है :

1. पोलीईथर पोलियॉल
2. प्रोपिलीन ग्लाइकोल
3. एथिलीन ग्लाइकोल

परियोजना की प्रमुख विशेषताएं

- जनवरी 27, 2019 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने शिलान्यास किया ।
- वर्ष 2023 तक प्रचालनाधीन होने की उम्मीद है ।
- सुरक्षित, स्वच्छ और हरी-भरी प्रौद्योगिकी
- रिफ़ाइनरी-पेट्रोकेमिकल एकीकरण
- बेहतर आर्थिक व्यवस्था और संसाधन उपयोग
- देश का सबसे बडा पोलियॉल काम्प्लेक्स और देश की केवल दूसरी इकाई
- डाउनस्ट्रीम उद्योगों के लिए अवसर पैदा करना, क्षेत्र में लघु और मध्यम स्तर के

उद्यमों का समर्थन करना

- बेहतर परिचालनात्मक सुविधाएं प्रदान करने के लिए तालमेल हेतु मौजूदा रिफ़ाइनरी के साथ एकीकृत किया जाएगा
- केरल सरकार द्वारा प्रस्तावित पेट्रोकेमिकल पार्क में संस्थापित होने वाले लघु और मध्यम स्तर यूनिटों के लिए पेट्रोकेमिकल फीडस्टॉक प्रदान किया जाएगा

परियोजना से लाभ

परियोजना के सामाजिक लाभ हैं :

1. महत्वपूर्ण पेट्रोकेमिकल उत्पादों की आयात प्रतिस्थापना
2. विदेशी मुद्रा की बचत
3. केरल सरकार द्वारा प्रस्तावित पेट्रोकेमिकल पार्क में डाउनस्ट्रीम उद्योगों के लिए फीडस्टॉक, जिससे केरल के औद्योगिक विकास में योगदान
4. डाउनस्ट्रीम उद्योगों के प्रचार और विकास के माध्यम से निवेश में वृद्धि
5. रोज़गार अवसर में वृद्धि
6. पोलियॉल परियोजना, केरल में उच्च प्राथमिकता वाले विनिर्माण क्षेत्र में प्रगति को बढावा

परियोजना की वर्तमान स्थिति

बीपीसीएल निदेशक बोर्ड द्वारा 28 सितंबर 2018 की अपनी बैठक के दौरान पोलियॉल पेट्रोकेमिकल परियोजना के लिए सुविधाएं लगाने को अनुमोदन प्रदान किया गया ।
अनुमानित परियोजना लागत : 11130 करोड रुपए
अनुसूचित यांत्रिक समापन : वर्ष 2023
पर्यावरण अनुमोदन प्राप्त तिथि : 30 अक्तूबर 2018
एफएसीटी लिमिटेड, कोचिन डिविज़न से भू अर्जन किया गया
पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन/जोखिम मूल्यांकन अध्ययन पूरा किया गया
परियोजना के लिए जल स्रोत निर्धारित करके अनुमोदन प्राप्त किया गया
सभी संसाधन यूनिटों के लिए प्रौद्योगिकी अनुज्ञप्तिदाता को निर्धारित करके अनुज्ञप्ति प्रदान किया जा रहा है
परियोजना प्रबंधन सलाहकारी सेवा का चयन किया जा रहा है
भारत के माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 27 जनवरी 2019 को शिलान्यास किया गया

यूनिट क्षमता

यूनिट	क्षमता (केटीपीए)
प्रोपिलीन ऑक्साइड	300
प्रोपिलीन ग्लाइकोल	100
पोलीईथर पोलियॉल	250
एथिलीन ऑक्साइड / मोनो एथिलीन ग्लाइकोल	140
एथिलीन प्रतिप्राप्ति यूनिट	100
क्यूमीन यूनिट	35

- प्रोपिलीन ऑक्साइड यूनिट, पोलियॉलों की मुख्य यूनिट, एक सिद्ध प्रौद्योगिकी है
- बाज़ार की माँग के आधार पर विविध प्रकार के पोलियॉल के उत्पादन करने के लिए पोलियॉल उत्पादन प्रक्रिया में लचीलापन है
- बाज़ार की माँग के आधार पर पोलियॉल या प्रोपिलीन ग्लाइकोल के उत्पादन के बीच बदलने के लिए पोलियॉल उत्पादन प्रक्रिया में लचीलापन है

पोलियॉल परियोजना - उत्पाद स्लेट / अंतिम उपयोग

पोलियॉल (250 केटीपीए)	फर्नीचर, बिस्तर और मोटर वाहन अनुप्रयोग (पीयू फॉम) प्रशीतन, निर्माण और जूता कोटिंग, सीलेंट, एड्हेसीव्स एवं एलास्टोमर
प्रोपिलीन ग्लाइकोल (100 केटीपीए)	फर्नीचर, बिस्तर और मोटर वाहन अनुप्रयोग (पीयू फॉम)फार्मस्यूटिकल्स, सौंदर्य प्रसाधन, खाद्य सुगंध और एफआरपी उत्पाद
एथिलीन ग्लाइकोल (140 केटीपीए)	फाइबर और पेट(फाइबर) का विनिर्माण

पोलियॉल की दूसरी विशेषताएं

- गैर खतरनाक और गैर ज्वलनशील
- दीर्घकालीन उपयोग और पर्यावरणानुकूल
- स्वास्थ्य या पर्यावरणीय प्रभाव के लिए वर्गीकृत नहीं
- पोलियॉलों के परिवहन में कोई विशेष विनियम नहीं

कृष्णप्रसाद के सी / पेटकेम विभाग

ध्वनि और कंपन से जुडे खतरे

ध्वनि, तीव्र, परेशान करनेवाली और अप्रिय है । अत्यधिक शोर, श्रवण हानि का कारण बन सकता है । तेज़, शक्तिशाली प्रभाव युक्त शोर, जिसे आवेश शोर कहा जाता है, विशष रूप से हानिकारक है । व्यावसाय जन्य रोगों का एक मुख्य कारण शोर होता है । निम्न शोर स्तर तक लोगों को परेशानी पहूँचा सकता है । उदा : खुले प्लान युक्त कार्यालयों में एकाग्रता की आवश्यकता वाले काम करना ।

उच्च शोर का सामना करने से स्थायी रूप से श्रवणशक्ति की हानि हो सकती है । इस प्रकार के श्रवण हानि को न तो सर्जरी या न ही श्रवण सहायक उपकरण ठीक कर सकता है । लघु कालावधि के लिए ऊँचे शोर से संपर्क हमारी श्रवण शक्ति में अस्थायी रूप से परिवर्तन (हमारे कान भरे जैसे लगना) या अपने कानों में गूँजने की आवाज़ (टिनिटस) ला सकता है । ये लघुकालीन समस्याएं, शोर से दूर हो जाने के कुछ मिनट या घंटे में दूर हो सकती है । तथापि, ऊँची आवज़ का बार-बार सामना करने से स्थायी टिनिटस और / या श्रवण हानि हो सकती है ।

ज़ोरदार शोर, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा कर सकता है, उत्पादकता कम कर सकता है, संचार और एकाग्रता में तकलीफ़ पहूँचा सकता है और चेतावनी संकेतों को न सुनकर कार्यस्थल पर दुर्घटनाएं और चोट के कारण बन सकता है । शोर से प्रेरित श्रवण हानि का प्रभाव गहरा हो सकता है, उच्च आवृतित आवाज़ सुनने, बातें समझने की आपकी क्षकता को सीमित करके आपके संचार की क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है ।

शोर केवल सुनवाई के अंगों की ही नहीं, बल्कि शरीर के कई कार्य, जैस हृदय गति, रक्त चाप और श्वसन दर को भी प्रभावित कर सकता है । सामान्य रूप से शोर, विघटनकारी हो सकता है और आपकी एकाग्रता और नींद को प्रभावित कर सकता है ।

सुरक्षा मुद्दे

काम पर शोर, संचार के माध्यम से रोक सकता है और चेतावनियों को सुनना कठिन बना सकता है। यह लोगों को अपने पर्यावरण संबंधी जागरूकता कम कर सकता है । इन मुद्दों से सुरक्षा जोखिम पैदा हो सकता है - लोगों को चोट या मौत तक के खतरे में डाल दे सकता है । हम यह शोर कैसे नियंत्रित कर सकते हैं ?

शोर कम करने और शोर से संपर्क में आने की संभावना कम करने के लिए कई मार्ग हैं । शोर संबंधी जोखिम कम करने के लिए निम्नलिखित लागत प्रभावी कार्रवाई कर सकते हैं :

- सबसे पहले शोर के स्रोत हटाने के तरीके के बारे में सोचना है - उदा : शोरदार मशीन को श्रमिकों द्वारा न सुनाई देने वाले स्थान पर बिठाना
- यदि यह संभव नहीं है तो, देखें कि कम शोरदार उपस्कर का उपयोग संभव है या किसी भिन्न या कम शोरदार प्रक्रिया को अपना सकते हैं
- किसी मशीन या प्रक्रिया द्वारा

उत्पादित शोर कम करने के लिए स्रोत पर ही अभियांत्रिकी / तकनीकी नियंत्रण

- लोगों तक पहूँचने के राह पर शोर कम करने के लिए स्क्रीन, बाधा, बाडे और अवशोषक सामग्री का उपयोग
- शब्दहीन वर्क स्टेशन रहने लायक कार्यस्थल की अभिकल्पना करना
- शोर स्तर कम करने के लिए बेहतर कार्य तकनीक

यदि आप को अपने कार्य पर्यावरण में शोर से परेशानी लगे तो अपने कानों की रक्षा के लिए कान मफ या कान प्लग जैसे समुचित वैयक्तिक संरक्षी उपस्कर (पीपीई) पहनना चाहिए ।

अनुरक्षण की योजना

शोर नियंत्रण के उद्देश्य से प्रदान किए गए किसी भी वस्तु का अनुरक्षण करना हमारी ड्यूटी है । हमें यह सुनिश्चित करने के लिए एक सिस्टम स्थापित करना चाहिए कि शोर नियंत्रण उपस्करों का अनुरक्षण किया जा रहा है ताकि ये प्रभावी रहें । नियमित और प्रतिक्रियाशील अनुरक्षण के लिए इसे हम अपने सिस्टम में शामिल कर सकते हैं । भले ही मरम्मत हीनता का स्तर मामूली लगें, तो भी कई शोर नियंत्रण उपयों की प्रभावशीलता को काफी कम किया जा सकता है ।

कंपन

कंपन का मतलब है, तेज़ संचलन, इधर-उधर का या दोलन संचलन ।

काम पर यांत्रिक कंपन, श्रमिकों को हैंड-आर्म कंपन (एचएवी) और या पूरे शरीर के कंपन (डब्ल्यूबीवी) का सामना करने को मज़बूर कर सकता है ।

एचएवी, श्रमिकों के हाथ और बाहों में कंपन संचारित करने वाले कार्य उपस्कर और कार्य प्रक्रियाओं के उपयोग से होता है। एचएवी का नियमित दीर्घ कालीन रूप से सामना करना, स्थायी और कमज़ोर बना देने वाले स्वास्थ्य प्रभाव का कारण बन सकता है, जिसे हैंड-आर्म कंपन सिनड्रोम कहा जाता है ।

डब्ल्यूबीवी, कार्यस्थल के मशीन और वाहनों के कारण सीट या पैर से प्रेषित कंपन के कारण होता है । डब्ल्यूबीवी के नियमित और दीर्घकालीन उच्च स्तर में सामना करने से पीठ के निचले हिस्से में दर्द उत्पन्न हो सकता है ।

नियंत्रण के उपाय

1. श्रमिकों द्वारा सामना किए जाने वाले महत्वपूर्ण कंपन स्रोतों को पहचानने के लिए कार्य पर्यावरण का जोखिम मूल्यांकन किया जाएगा और अपेक्षित है तो सामना किए कंपन को माप लें।
2. कंपन का सामना करने संबंधी जोखिम, स्रोत पर ही मिटा दें या न्यूनतम बना दें
3. यदि जोखिम मूल्यांकन के परिणाम यह सूचित करता है कि सामना किए कंपन अधिक है तो हमें तकनीकी और संगठनात्मक उपायों का एक कार्यक्रम तैयार करके कार्यान्वित करना चाहिए, ताकि श्रमिक को कंपन का सामना करने से या तो रोकें या इसे न्यूनतम बनाएं।
4. नियोक्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कंपन का सामन किए श्रमिक और कार्य पर्यावरण प्रतिनिधि, निम्नलिखित के संबंध में पर्याप्त निर्देश और प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं :

   क) कंपन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव

   ख) कंपन के कारण स्वास्थ्य की हानि का प्रारंभिक पहचान और रिपोर्टिंग

   ग) स्वास्थ्य निगरानी की आवश्यकता और क्रियाविधि

   घ) अधिकतम कंपन सीमा और जोखिम कार्रवाई मूल्य

   ड) कंपनी में कंपन माप और स्वास्थ्य जोखिम मूल्यांकन के परिणाम

   च) कंपन से स्वास्थ्य जोखिम को रोकने या कम करने के लिए कार्यस्थल पर किए गए उपाय

4. नियोक्ता यह सुनिश्चित करेंगे कि कंपन का सामना करने वाले सभी श्रमिक, स्वास्थ्य निगरानी के अधीन हैं
5. जहाँ स्वास्थ्य निगरानी से यह पता चलता है कि कंपन से किसी श्रमिक के स्वास्थ्य पर हानि हुई है, तो खतरा कम करने के लिए उपाय किए जाएं और यदि अपेक्षित है तो श्रमिक को किसी दूसरे काम या स्थिति पर लगाया जाएं जहाँ और कंपन का सामना करने का खतरा न हों ।

उषा एन, एचएसई विभाग

अतिआत्मविश्वास का कार्यस्थल पर प्रभाव

कर्मचारियों को सुरक्षित रखने के मामले में कार्यस्थल रोज़ नई नई चुनौतियों का सामना करता है । काम की प्रकृति या कंपनी के प्रकार की वजह से कुछ कार्यस्थलों को दूसरों से अधिक दुर्घटनाओं का सामना करना पडता है । अधिकतर दुर्घटनाएं, दुर्घटनओं में शामिल कर्मचारी द्वारा किए गए असुरक्षित कार्यों के कारण होती हैं । परितुष्टि और अतिआत्मविश्वास का परिणाम, अक्सर दुर्घटनाएं होती हैं । यह कभी मेरे साथ नहीं होगा - यह रवैया, आपके काम में अनुचित कार्यविधियाँ, उपकरण या शोर्टकट का कारण बन सकता है । आप चाहे लंबी अवधि से इसी काम पर क्यों न हो और चाहे जितने भी कुशल क्यों न हो, आपको आधारभूत सुरक्षा पूर्वोपायों को याद रखना चाहिए ।

यह अच्छी बात है कि आपको अपने काम के बारे में विश्वास है । आप शीघ्र और अच्छी तरह अपना काम करने की काबिलियत पर नाज़ रखते हैं । तथापि, एक ऐसी चीज़ है जिसे अतिआत्मविश्वास कहते हैं - जब आप जोखिमों के बारे में भूल जाते हैं या सुरक्षित कार्य प्रणालियों का इस्तेमाल नहीं करते हैं । अति आत्मविश्वास, हमेशा ज्ञानपूर्ण या सही कार्रवाई तक नहीं पहूँचाता; यह क्षमता और निर्णयों का अतिप्राक्कलन है । अति आत्मविश्वास, बाद में हमें यह सोचने को मज़बूर कर सकता है कि काश, हमने पहले थोडे बेहतर तरीके से तैयारी की होती ।

जब आत्मविश्वास, अति आत्मविश्वास बन जाता है, तो यह एक संपत्ति से देयता में बदल जाता है । अपने आप में इतना विश्वास है कि जब एक कर्मचारी यह सोचने लगता है कि वह किसी हालत में कभी कभी गलत नहीं हो सकता, तो यह एक समस्या बन जाती है । ऐसे अति आत्मविश्वास से कार्यस्थल में सुरक्षा पर प्रभाव पड सकता है ।

किसी काम पर वर्षों के अनुभव से लोग, अपने काम पर बहुत ही सुपरिचित हो जाते हैं । वे अपनी बंद आँखों से यह काम कर सकते हैं । काम से इतने सुपरिचित होना ही उन्हें सुरक्षा नियमों के सख्त अनुपालन से हटा देते हैं । इस घटना को स्पष्ट करने वाला और एक सामाजिक सिद्धांत है पुष्टि झुकाव, यानि कि हमारी पूर्व संकल्पनाओं की पुष्टि करने लायक सूचनाओं की तलाश करने की प्रवृत्ति । अतः किसी खास काम करने वाले व्यक्ति, सामान्य सुरक्षा कार्य प्रणालियों का पालन किए बिना उनके द्वारा ठीक रूप से किए गए काम के बारे में सोच सकता है । ऐसे पुष्टि झुकाव, अति आत्मविश्वास तक ले जा सकता है । दुर्भाग्य से इसके परिणाम स्वरूप गंभीर चोट उत्पन्न हो सकता है । हार्डहैट न पहनने से लेकर फाइल कैबिनट दराज खुले छोडना तक चोटों का कारण बन सकता है । संक्षेप में, अति आत्मविश्वास कार्यस्थल की सुरक्षा को सीधे प्रभावित करता है ।

कार्यस्थल में आत्वविश्वास, एक बहुत ही उपयोगी विशेषता है । लेकिन, अति आत्मविश्वास खतरनाक है । चाहे एक ऐसा शारीरिक काम है जो आप करने के काबिल न होने पर भी करने के बारे में सोचते हैं या एक ऐसा रवैया कि ऐसी सनकी दुर्घटना मेरे साथ कभी न होगी - ये सब चोट के कारण बन सकते हैं । कभी भी अति आत्मविश्वास को अपनी सुरक्षा के साथ समझौता न करने दें ।

अतिआत्मविश्वास नियंत्रित करने के लिए सुझाव :

- सबसे पहले अपने आप से ईमानदार रहें : आप अपनी क्षमताओं पर विचार करेंगे, तो आपको अपनी सीमाएं भी समझना चाहिए ।
- अपने आपकी तुलना दूसरों से न करें : अति आत्मविश्वास, दूसरे लोगों की योग्यता, कौशल और क्षमताओं का अवमूल्यांकन करना है ।
- ऐसे लोगों की आलोचनाओं, खासकर रचनात्मक आलोचनाओं पर ध्यान देना, जिनपर आपको भरोसा है : यह आप का अति आत्मविश्वास कम करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदमों से एक होगा ।
- अपनी प्रतिबद्धताओं को गंभीर रूप से लें: अति आत्मविश्वास, कुछ ज्यादा ही अपने ऊपर लेने का कारण बन सकता है। जब आप किसी से कहते हैं कि आप कुछ करेंगे, तो इसके लिए ज़रूरी प्रयास और समय के बारे में यथार्थवादी रहें ।
- अपनी असफलताओं, या अपने वैयक्तिक लक्ष्यों को प्राप्त न किए घटनाओं के बारे में सोचने के लिए समय लें : यह न केवल आपको अपनी क्षमताओं के यथार्थ रूप जानने के लिए ही नहीं, बल्कि यह आपको अपने जिन कुशलताओं पर काम करना है, यह जानने को भी मदद करेगा ।
- कल्पनाओं को सच्चाइयों से दूर रखें: चलचित्रों में हम सब अतिमानवीय कारनामों और स्टंट करते हुए देखते हैं, लेकिन याद रखें कि यह प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा सुरक्षित पर्यावरण में किया जा रहा है ।

"एक बार मारे जाने से अच्छा है सौ बार सचेत रहना (मार्क ट्वेइन)"

बेहतर तनाव प्रबंधन

हमारे शरीर में एक जीन के परिवर्तन के लिए एक मिल्यन वर्ष लगता है । एक मिल्यन वर्ष ! शारीरिक रूप से, हम वही मानव है, जो 300 वर्ष पूर्व थे । लेकिन देखिए कि इतने कम समय में ज़माने में कितना परिवर्तन आया है । आज कुछ चीज़ जीवन आसान बना देता है : वाशर एवं ड्रायर, परिवहन, बडी मात्रा में खाने की चीज़ें, विद्युत आदि। लेकिन आज कुछ चीज़ जीवन को और विवेक शून्य भी बना देता है : सेल फोन, वाहन, वर्धित आबादी, जंक फुड, टेलीविशन, इंटरनेट, व्यस्त जीवन आदि। इसमें अचरज नहीं है कि हम तनाव से भरे हैं और अपने स्वास्थ्य के बारे में बेपरवाह है । ये पागलपन और व्यस्त जीवन शैली बदलने वाली नहीं ।

तनाव क्या है ?

यह एक ऐसा शब्द है जो हम हर कहीं सुनते हैं । लेकिन इसका असली मतलब क्या है ? किसी घटना की प्रतिक्रिया में आपके शरीर में होनेवाली प्रतिक्रिया है तनाव ।

तनाव का कारण क्या है ?

आपके शरीर में तनाव प्रतिक्रिया शुरू करने वाली किसी भी घटना को तनावकारी कहा जाता है। यह एक भौतिक आवश्यकता हो सकती है, जैसे कि बस पकडने के लिए दौड या भावात्मक माँग, जैसे कि अपनों की बीमारी या मृत्यु का सामना करना । अच्छी बातें, जैसे कि शादी करना या छुट्टियों पर जाना, तक तनावकारी हो सकती हैं ।

तनाव आपके स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित कर सकता है ?

तनाव की प्रतिक्रिया में आपका शरीर पहले "लडाई या भगदड " स्थिति में हो जैसे कार्य करता है । आपके दिल की गति बढ जाती है, आप तेज़ी से साँस लेने लगते हैं और अड्रनालिन नामक हॉर्मोन आपकी रक्तधारा में पंप कर देता है ताकि आपको लडने या भागने की ताकत मिल जाएं । ये परिवर्तन, आपको लघु अवधि के तनव का सामना करने में मददकारी है । लेकिन यदि तनावकारी अधिक समय तक बना रहता है तो ये परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को हानि पहुँचा सकते हैं ।

कितना तनाव बहुत अधिक तनाव है ?

समझने की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी ज़िंदगी में कुछ हद तक तनाव होना ज़रूरी है । आहार की तरह तनाव भी ऊर्जा का स्रोत है । तथापि, बहुत अधिक (या बहुत कम) तनाव हानिकारक हो सकता है । सामान्य रूप से, आप जितने तनाव के अधीन, जितनी देरी तक होते हैं, आपके स्वास्थ्य और काम को उतना ही हानि पहुँचेगा । ऐसे में तनाव से दूर रहने के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

1. **अच्छा खाना खाएं :** जंक फुड (फास्ट फुड, संसाधित और नमक/चीनी से लदा हुआ), आपके रसायनिक दिमाग या शरीर को तनाव का सामना करने में मदद नहीं पहुँचाता । जीवन युक्त खाना, अच्छा खाना, आपके मन और शरीर को उसकी तरफ़ आने वाले लाखों कार्यों का सामना करने में मदद देता है ।
2. **व्यायाम :** खुली हवा में तेज़ चलने का व्यायाम करें । यह व्यायाम, वज़न कम करने की ही नहीं बल्कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ चित्त रखने की है ।
3. **सूचना :** तनाव को आपके ऊपर हक जमाने न दें । तनाव के कारण बनने वाली स्थितियों को पहचानें और इन्हें आपकी तरफ़ आते हुए पहले ही देख लें । ऐसे तनाव की स्थिति को आते हुए पहले ही समझ लेंगे तो आप इन्हें बेहतर रूप से निपट सकते हैं।
4. **अपने दिल से निकाल डालें :** तनाव के बारे में अपने दोस्त या साथी से बातें करें । अक्सर दिल की बात कह देने से ही भार कम हो जाता है ।
5. **विनोद की मनोदशा बनाए रखें :** इस बारे में आप बात कर सकते हैं तो इसमें छिपी व्यंग्य और विनोद को देखने की कोशिश करें ।
6. **कृतज्ञ रहें :** शुक्रिया कहने की आदत बनाएं।
7. पूछें कि, इतनी जल्दी भी क्या है ? : खुद अपने बारे में सोचें, यदि है तो अपनी दवाएं ठीक समय पर नियमित रूप से लें, आवधिक रूप से अपने डाक्टर से ज़रूर मिलें ।
8. **लंबी साँस लें :** जब आपका लगें कि तनाव आपको घेर रहा है, अपने लिए एक पल निकालें। चाहे यह केवल एक ही घंटा क्यों न हो, सब से दूर होकर, अकेला बैठें। शांति और खामोशी पाएं ।
9. **सरल रखें :** जहाँ कहाँ संभव हो, सरलता को अपनाएं । क्या आपको आमंत्रित सभी पार्टी या सभा में जाना ज़रूरी है ?
10. **दूरदर्शन बंद रखें :** वैसे तो ज्यादातर बुरी समाचार ही दिखाते हैं, और दूसरी चीज़ें करने के हमारा समय ही नष्ट होता है
11. **पानी पिएं :** पानी, आपके पूरे सिस्टम को बेहतर रूप से कार्य करने में मदद देता है। वज़न कम होना और समुचित जलयोजन में संबंध है ।
12. **मज़ा लें :** अपने काम का, ज़िंदगी का मज़ा लें।
13. **नींद लें :** यदि आप आराम लिए हुए हैं, तो बेहतर रूप से काम संभाल सकते हैं । यही नहीं, यदि रात को आप आराम ले सकें तो तनाव का सामना भी करने में आप ज्यादा काबिल रहेंगे ।

डॉ लिस्सियाम्मा एन के
व्यावसायिक स्वास्थ्य केंद्र

मेरा गाँव

शिवलीला एल /वित्त विभाग

बचपन में अपनी दादी से कहानियाँ सुना करता थी । वह ज़्यादातर गाँव और उसकी खूबसूरती का वर्णन करती थी । वहाँ के लोगों की सादगी, उनका रहन-सहन, उनके पोशाक कैसे होता था, यह सब मुझे बताया करती थी । उनकी कहानियाँ सुन सुनकर गाँव का एक चित्र मैं ने अपने मन में रचाया था । बडा होकर मैं भी गाँव में बसेरा करने का निर्णय लिया । शहर के शोर, गाडियों की लम्बी प्रदूषित हवा, गन्दगी- इन सबसे मैं तंग आ चुका था । पिताजी ने बताया था कि स्कूल की परीक्षा के बाद गर्मी की छुट्टियों के दिन वे हमें अपना गाँव ले जाएंगे । यह सुनकर मैं खुशी से उछल पडा । मैं खुशी से फूला न समाई । मेरी खुशियाँ सातवाँ आसमान छू गई । परीक्षा खतम होने की प्रतीक्षा में मैं दिन गिनने लगा । अखिर वह दिन आ गया। मैं स्कूल से आते ही अपना सामान बटोरने में लगा, जिन्हें गाँव ले जाना था ।

गाड़ी शाम की थी । मैं ने कभी रेलगाडी में यात्रा नहीं की थी । बड़ी उत्सुकता के साथ गाडी में चढ़ कर बैठ गया । एक तरफ चाय वाला चाय पूछने लगा तो दूसरी तरफ वड़ा और मूँगफली ! मैं ने अपने पिताजी से मूँगफली खाने की इच्छा प्रकट की । लेकिन उसने मना कर दिया । तरह तरह के लोगों से रेल डिब्बा भर गया । रेलगाड़ी अपनी सफर पर निकल पड़ी, जैसे मैं निकल पड़ा था । यात्रा के दौरान कई तरह को लोगों से भेंट हुई । एक महाशय खुद अपने समाचार पत्र खरीदे बिना दूसरों से अखबार लेकर पढ़ता था । कुछ महिलाएं गप्पे मार रही थीं । छोटे बच्चे रो रहे थे । इनमें से एक महाशय पर मेरी नज़र पड़ी । ऐसा लगा कि वह किसी बात से दुखी था । वह मौनव्रत धारण करके एक कोने में बैठा था । उसे देखकर लगा कि वह कई दिनों से नहाया नहीं । रेलगाड़ी अपनी धुन में पटरी पर आगे बढ़ रही थी। मैं उस आवाज़ का आनंद ले रहा था ।

मेरे पिताजी उस मौनव्रत धारण किए हुए आदमी से बातें करने लगा । मैं ने देखा तो वह बड़ी आसानी से बाबुजी के प्रश्न के जवाब दे रहे थे । उनकी बातों के बीच में मैंने सुना कि वह किसी गाँव का रहनेवाला था । उनके गाँव में पानी की दिक्कत थी और लोगों को मीलों चलकर पानी लाना पड़ता था। वह आदमी गाँव का मुखिया था । जंगलों के बीच में से गुज़रकर उनको जाना पड़ता था पानी लाने के लिए । इस समस्या का हल ढूँढ नहीं पा रहा था । यह सुनकर मैं थोड़ी देर के लिए चिन्तित रहा । मेरे मन में भी एक सवाल उठा । यहाँ शहर में नल खोलने से पानी आ जाता था । किसी को कोई दिक्कत ही नहीं था । मैं ने बाबुजी से पूछा कि क्या अपने गाँव में भी स्थिति ऐसी ही है । बाबुजी ने दिलासा दी की गाँव में हमेशा पानी रहता था । लेकिन पिताजी के गाँव जाकर कई साल बीत गए । वे वहाँ की हालात से बिलकुल अनजान थे ।

गाड़ी स्टेशन पर आ रूकी । स्टेशन पहूँचने के पहले से ही गरम हवा का अनुभव होने लगा। वहाँ के पेड़ पौधों में जान ही नहीं थी । लोग बैल गाडियों में पानी कहीं से भरकर ले जा रहे थे । यह देखकर गाँव का जो चित्र मैं ने अपने मन में बनाया था, उसे हल्के से पोंछने लगा । मेरे पिताजी भी गाँव की हालात देख आश्चर्यचकित रह गया । हम उनके पुश्तैनी घर में जाकर रहे। थोड़ा बहुत सफाई का काम था, जो हम दोनों ने मिलकर किया । लेकिन अब पानी की आवश्यकता पड़ी । एक कुआँ था, जो भी सूखा पड़ा था। खाना तो खरीद सकते थे लेकिन नहाने केलिए पानी एक समस्या था। औरों की तरह हमें भी दूर जाकर पानी लाना पड़ा ।

उस गाँव में किशोर नाम का 10 साल का लड़का रहता था । मैं उस से दो साल बड़ा था। थोड़े ही दिन में हम दोनों अच्छे दोस्त बन गए। उनके साथ बैलगाडी में बैठकर मैं भी निकल पड़ता था पानी लेने के लिए, शाम को वापस लौटते थे । पानी

लाने में ही पूरा दिन निकल जाता था । मैं ने अपने दोस्त से पूछा कि इस बीच वह पढ़ाई के लिए वक्त कैसे निकालता है? उन्होंने बताया कि यह तो उनके रोज़ का काम था और उसने इस हालात को मन से स्वीकार कर लिया था । थोड़े दिन के लिए मुझे यह अच्छा लगा । फिर बाद में मैं कभी कभी ही निकल पड़ता था ।

गाँववालों की हालत देख मुझ से रहा नहीं गया । अपने बाबुजी से मैं ने पूछा कि क्या वह पानी के विषय में कुछ कर पाएगा या नहीं । उसने कोशिश करने का वादा किया । गाँववालों को इकट्ठा करने में मैंने अपने पिताजी की सहायता की । पन्चायत बुलायी गयी और पानी का प्रस्ताव रखा गया । बाबुजी ने कई सुझाव दिए, जिनमें से एक को उन लोगों ने स्वीकार किया । जो गाँव का एकमात्र कुआँ था, उसकी सफाई की गई और गहराई बढ़ा दी गई । पानी धीरे धीरे से कुएं में भरने लगा । गाँववालों के मुखडे पर की खुशी और मुसकुराहट देखने लायक थी । मैं भी खुशी से नाचने लगा, जैसे मुझको ही अनमोल तोफ़ा कुछ मिला हो । फिर थोड़े दिन बाद एक बोरवेल भी खोदा गया । उसमें से भी पानी आने लगा । हर एक घर में एक नल भी लगा दी गई ताकि गाँववालों को फिर से कोई तकलीफ़ न हों ।

अपने घर में भी एक नल पाकर किशोर खुशी से नाचने लगा । उसने नल खोला तो उसमें से पानी आते देखकर वह खुशी से इधर उधर दौडने लगा । मुझे भी बहुत संतुष्टि मिली । गाँववालों ने पिताजी की शुक्रिया अदा की । मैं ने एक कोने में खड़े पिताजी के चेहरे पर वह मुसकुराहटदेखा। दो महीने कैसे कट गया पता ही नहीं चला। गाँववाले सिंचाई भी करने लगे। गांव थोड़ा थोड़ा करके हरा-भरा होने लगा। मेरे मन का चित्र फिर से हरा बन गया ।

जाने का वक्त आ गया । बहुत भारी मन से मैं स्टेशन की ओर निकल बड़ा। वहाँ के लोगों का प्यार देखकर मेरी आँख नम हो गई । पूरा गाँव हमें छोडने स्टेशन आया। किशोर जो मेरे सबसे अच्छा मित्र बन गया था उसकी समस्या का समाधान भी मिल गया और वह भी स्कूल जाकर पढ़ाई कर सकता था । मैं छुट्टियाँ में किशोर से गाँव वापस आने का वादा करके गाड़ी में चढ़कर बैठ गया । अभी पहूँचना था मुझे शहर, उसी प्रदूषित हवा और गन्दगी में !

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

ज़िंदगी

कोमल देवांगन / विनिर्माण विभाग

कहते हैं ज़िंदगी बडी होनी चाहिए, लंबी नहीं,
परंतु आधुनिक युग में इसका मतलब शायद किसी ने समझा नहीं
ज़िंदगी, रिश्तों का, खुशियों का, गमों का समामेलन हों
ज़िंदगी सार्थक तब होती है जब आपस में प्यार होता है ।

चाहे निभाना हो मित्रों का साथ
या सुननी पडे अपनों की खट्टी मीठी बात
या समाज में हो निभाना एक आदर्श किरदार
रिश्ता ऐसा हो कि खुशियों का आदान-प्रदान हों
ज़िंदगी सार्थक तब होती है जब आपस में प्यार होता है ।

किसने कहा जरूरी है धर्मों में बंटना है इंसान को
उसके बच्चे आपस में ही लडे रहें, कहाँ गँवारा होगा भगवान को
समाज तो सत्य, अहिंसा, परमार्थ, प्रेम, इनसे गुलज़ार होना चाहिए
ज़िंदगी सार्थक तब होती है जब आपस में प्यार होता है ।

प्यार होता है बच्चों के मासूम हँसी में
ऊँच-नीच, जात-पात के परे रखकर हुई दोस्तों में
यहाँ अली है दिवाली में तो राम भी है रमज़ान में
अखंड भारत तो आपसी सहिष्णुता का त्योहार होना चाहिए
ज़िंदगी सार्थक तब होती है जब आपस में प्यार होता है ।

मित्रधर्म

अंकुर मिश्रा/एःएस-निरीक्षण

रामपुर नाम का एक गाँव था । यही कुछ आबादी रही होगी, एक हज़ार के करीब । गाँव तो एक था, पर बंटा था अलग अलग खण्डों में । हिंदुओं का मकान अलग, मुसलमानों का अलग । यही नहीं, इनमें से अलगाव था । शिया मुसलमान उत्तर की दिशा में, सुन्नी मुसलमान दक्षिण में, ब्राह्मण पूर्व में, शूद्र पश्चिम में । कहने को तो लोग आपस में बडे प्यार से रहते थे । लेकिन पूर्व दिशा के लोगों का प्यार पूर्व दिशा में ही बहता था, दक्षिण के लोग तो दक्षिण को ही अपना संसार मानते थे ।

और हाँ, बहुत अच्छा था यह गाँव । लोग अपने अपने धर्म का बडी कडाई से पालन करते थे । सुबह के चार बजते ही मुल्ला जी मस्जिद में बाँग देना शुरू कर देते थे और देखादेखी पंडित जी गायत्री मंत्र का जाप ज़ोर-जोर से लाउडस्पीकर पर । शूद्र भी कहाँ पीछे रहते, जय भीम-जय भीम के नारे चहुँ दिशा में सुनाई देने लगते । अगर कोई बाहरी आ जाता तो उसको लगता कि कोई बाजार लगी हो ।

ऐसे ही पूरा दिन बीतता, अगर कोई कुत्ता मुसलमानों की बस्ती से भागकर हिंदुओं की बस्ती की तरफ़ आता दिखता, तो उस कुत्ते को भी मुसलमान बना कर टाँग तोडकर मुसलमानों की बस्ती में भगा दिया जाता । और अगर हिंदुओं की गाय भूल से मुसलमानों की बस्ती में चली जाती तो लौट के न आती ।

धीरे-धीरे समय बीतता गया । और कुछ ऐसा हुआ इस गाँव में, जिसका होना उस गाँव की तस्वीर ही बदल गया ।

अब इसे संयोग कहें या एक खराब दिन, हिंदुओं का खुशी का त्योहार और मुसलमानों का गम का त्योहार एक ही दिन आ गया ।

अब गाँव तो एक ही था, और गाँव का क्षेत्रफल भी कम । खुशी मनायी जाएं या गम । बडा असमंजस था । लेकिन फिर घटी एक घटना । खुशी का जुलूस और मातम का जुलूस एक ही दिशा में एक दूसरे से भिड गया । देखते ही देखते तलवारें और बंदूक बाहर निकल आए, न आव देखा, न ताव । दोनों धर्मों के लोग टूट पडे एक दूसरे के ऊपर । मार-काट मच गयी । खून की नदिया बह गई ।

औरतों के सिर का सिंदूर उजड गया । सुहागिनें विधवा हो गईं । माताएं बिना संताने के और बहनें बिना भाइयों के । पूरा का पूरा रामपुर श्मशान में बदल गया । जो बच गए थे उनका भी अंग भंग । और इस तरह से हँसता खेलता गाँव उजड़ गया ।

बीस साल बीत गए । टी वी पर शांति पुरस्कारों की घोषण की जा रही थी । और इस साल का शांति पुरस्कार जीता है, रामपुर के शिवशंकर और मुहम्मद अली ने । पूरे देश में फिर से एक कहानी की चर्चा होने लगी, अरे यह तो वही रामपुर है जो बीस साल पहले दंगे की आग में उजड गया था । वहाँ के दो व्यक्ति, वह भी अलग-अलग धर्म के और एक साथ शांति पुरस्कार जीत गए, ऐसा कैसे हो गया ।

पत्रकारों ने उन दो दोस्तों का साक्षात्कार करने का निर्णय लिया और उसका टीवी पर प्रसारण भी किया गया । मुहम्मद अली ने जो कहानी सुनाई, वह सुनकर तो पूरा देश चकित रह गया ।

जब पूरा रामपुर दंगे की आग में झुलस रहा था शिवशंकर और मुहम्मद दोनों ने अपने परिवारों को खो दिया । एक दिन दोनों के घरों में भी आग लगा दी गई । और इस तरह से दोनों सड़क पर आ गए ।

एक दिन की बात है, सूरज ढल गया था और घनी रात ने अपना साया सूने रामपुर में बिखेर दिया था । गाँव में एक खूँखार जानवर दिखाई दिया । शिवशंकर और मुहम्मद दोनों डर गए । लेकिन दोनों अपने-अपने धर्म में बहुत आस्था रखते थे । एक ने पुकारा, हे राम ! मुझे बचाओ, तो दूसरा चिल्लाया, अल्लाह, मदद कर !

पर बात न बनी । तो खूँखार जानवर उनकी तरफ बढता ही गया । शिवशंकर को

पता था श्रीराम के पास धनुष-बाण होता है, वो ज़रूर इस जानवर को भग देंगे, पर ऐसा कुछ न हुआ, अल्लाह भी मुहम्मद की मदद को नहीं आए ।

आखिर जानवर ने कूद कर दोनों पर झपट मारा । हड़बड़ाहट में दोनों एक साथ आ गए, एक ने हाथ में आग उठायी तो दूसरे ने छडी और पूरी रात उस जानवर का डट कर मुकाबला किया । ऐसे में उन्हें कब नींद आ गयी, पता ही न चला ।

रात में शिवशंकर के स्वप्न में श्रीराम आए, उन्होंने बताया, मनुष्य तो एक ही भगवान की संतान है । क्या हिंदू क्या मुसलमान, ईश्वर ने कभी कोई भेद नहीं किया । जब बालक पैदा होता है तो अपने साथ माला या टोपी लेकर नहीं पैदा होता, ये चीज़ें तो उसको धरती लोक में पकडा दी जाती हैं ।

कुछ ऐसा ही सपना मुहम्मद ने देखा । सुबह उठते ही दोनों की आँखें खुली और दिमाग भी । उन्हें समझ आ गया किस तरह उन्होंने मिलकर खूँखार जानवर का सामना किया । उन्हें अपना सपना याद आया और यह बात भी कि "मित्रधर्म" ही सबसे बडा धर्म है । मानव वही है जो बिना भेदभाव किए एस दूसरे की सहायता करें ।

फिर क्या था, दोनों में प्रगाढ़ मित्रता हो गई । दोनों एक दूसरे के माता-पिता बन गए। सारा काम एक साथ करने लगे । एक को प्यास लगती तो दूसरा उसके लिए पानी लाता तो दूसरे को भूख लगती तो पहला अपना खाना उसको दे देता ।

दोनों साथ-साथ खेलते, खाते और खेतों में काम करते । धीरे-धीरे सूना रामपुर फसलों से लहलहाते लगा । गाँव तरक्की करने लगा । घर-घर जाकर ये दोनों बच्चे धर्म का पाठ पढाते कि आखिर में धर्म क्या है । एक दूसरे की सहायता करना, सदैव अच्छे काम करना यही धर्म है । "वसुधैव कुटुम्बकम"- समस्त धरती ही हमारा परिवार है - यही धर्म का मूल मंत्र है ।

धीरे धीरे दोनों की दोस्ती की चर्चा पूरे शहर में होने लगी और फिर ये बात पूरे देश में फैल गई ।

एक उजडे गाँव को देश का सबसे खुशहाल गाँव बनाने के लिए ही उन्हें शांति का विशिष्ट पुरस्कार भारत सरकार की तरफ से दिया गया ।

देखो दोस्तों यही है सर्वोच्च धर्म - "मित्रधर्म"

हिंदु मुस्लिम सिख इसाई,

आपस में हैं सब भाई-भाई !

बदलती दुनिया

अदिति जी पाई/ सी आर स्कूल

सोचती हूँ मैं अक्सर,
हर जीवन को संभालने वाली
हर इंसान का श्वास बनाते रखती
यह दुनिया क्यों बदलती अपना रूप ?

कुछ समय यह होता शांत
अच्छे मौसम से दिन बनाती सुखद
सूरज की किरणों से रोशनी फैलाती है
बारिश के बूँदों से पालती है पेड-पौधों को भी ।

माँ के जैसे खिलाती, प्यार करती हमें
कभी बारिश के प्यार से भिगो देती
कभी बहती ठंडी हवा से सहलाती भी,
हर घाव पर मरहम जैसे लगाती ।
कभी प्रकट करती अपना विराट रूप
तूफान बनकर, प्रलय उठाकर, बहा देकर तो,
कभी झुलस देकर, जलाकर कडी धूप से
जानती है यह सब कुछ नष्ट करना भी ।

जैसे भी रूप दिखलाती यह,
लोगों को अच्छे से जीना सिखलाती यह,
अपने हर कर्मों से संदेश देती यह
हर मुश्किल का सामना करते, आगे बढते रहें !

प्रकृति का खेल, मानव की सीख

दुर्गा प्रिया जी/ पी&सीएस

अरे, जीवन में कुछ कर दिखाओ, आगे बढो, धन नहीं है तो शुनक समान है । समाज में नाम, इज्ज़त कमाने के लिए धन की ज़रूरत है । राम कोने में बैठे सोच रहा था । गोपाल की पत्नी और बच्चे उस कोने में बैठ रो रहे थे। गोपाल लापता है ।

राम और गोपाल बचपन के दोस्त थे, दोनों को जीवन में बहुत प्रतीक्षाएं, आशाएं थी । राम ने हर कोशिश की थी, मंज़िल तक पहुँचने के लिए, और पहुँचा भी । लेकिन गोपाल वहीं वहीं रह गया । न संपत्ति, न नाम ।

बच्चों का रोना सुनकर राम सोच से उठे । हाथ पैर ढल गया था । कुछ करने में अशक्त। सब खो चुका । किसने सोचा था, यह हालत हो जाएगी ।

रात को नीचे से रोना सुना दिया । माँ बाप ऊपर चढ रहे थे । राम ने देखा घर में पानी चढ आया है । सोचा ही नहीं था कि इस इलाके में पानी भी आएगा । टेलीविशन पर देख रहे थे कि कहीं भूस्खलन हुआ है, पूरे राज्य में ज़ोरदार बारिश जारी है, सभी बाँधों में पानी भर गया है, सरकार बांधें खुलनेवाली है । उम्मीद थी कि पानी अपने रास्ते से बह सागर पहुँचेगा, और हमारे इलाके के आसपास आएगा ही नहीं ।

अरे, प्रकृति का खेल ! जब मानव ने उसकी अपनी जगह खींच ली, वह देख रही थी, ये किस हद तक जा रहे हैं । प्रकृति क्या कर सकती है, उसका संतुलन ही खो उठा ।

वह और भार का वहन करने में अशक्त थी । उसके हाथ-पैर बांध दिए थे ।

बाँध पहले ही सोच समझकर आहिस्ता आहिस्ता एक एक करके, बारी बारी में खोल दिया होता तो शायद आज इतना विपदा आ नहीं पडती । लेकिन मानव वहाँ भी लालची था । जो रास्ते नदी के थे, उसपर हक कर दिया था, अपने काबिल में करके वहां खेती आरंभ की थी, मकान बनाए थे....! बाँध खोलकर इनकी तबाही करना उनको मंजूर नहीं था । लेकिन जब तक अक्ल खुल गई तो प्रकृति अपने वश में न रही । घनघोर बारिश ने बाँध खुलवाया । नदियों को अपना रास्ता ही नहीं मालूम पडा, जो भी रास्ता मिला, उस से बह निकली, जल प्रवाहित होने लगा ।

ओ, क्या हाल है, यहाँ के घरवाले सब डरे हुए थे । बहुत सारे जन कैंप में पहुँच गए थे । यहाँ अमीर गरीब का अंतर नहीं है । सभी भूखे हैं, भींगे हुए हैं, लेकिन बदलने के लिए दूसरे कपडे तक नहीं । कैंप में लोग आकर खाना, कपडा, दवा आदि बाँट रहे थे । उनके आगे राम और उनके घरवालों ने भी हाथ फैलाया ।

हे राम, यह क्या हाल बना दिया तू ने ! अपने पसीने से बनाया महल, कार, सब प्रलय में डूब गया । आज मैं, मेरा परिवार, मेरे घर के नौकर-चाकर, सभी एक समान हो गए हैं । हम सब एक ही कैंप में खाना खाते हैं, सोते हैं ।

"अरे रो मत, गोपाल आ जाएगा।" कोई गोपाल की पत्नी को दिलासा दे रहा है । उसके बच्चों को राम की पत्नी ने खाना खिलाया । अरी, दूर देख, वह रहा गोपाल, नौका लेकर आ रहा है, हाँ, गोपाल उनकी रक्षा में लगा है जो और भी न फँसे पडे हैं । देखा उस नौके में गर्भवती महिला भी है । गोपाल पानी में लेटा पडा, ताकि वह महिला नौके से नीचे उतर सके ।

हफ़्ते बीते, केरल वापस अपनी पूर्व स्थिति में आ रहा है । टीवी में, फेसबुक में, वाट्साप में, सब मीडिया में गोपाल की प्रशंसा की जा रही है । उसको पुरस्कार दिया जा रहा है । सब गोपाल का गुण गान कर रहे हैं ।

राम गोपाल के पास गया और कहा, "दोस्त हम दोनों का एक ही सपना था कि एक दिन हम इस दुनिया में एक नाम कमाएंगे, विख्यात बनेंगे । मैं ने बहुत कमाया, अमीर बना, अपना एक नाम बनाया, इस पर मुझे अभिमान भी था, मुझे लगा था कि मैं ने सब कुछ हासिल किया है, नाम पाया है, लेकिन सब पानी में बह गया । लेकिन तू, जहाँ तू गिरा, उधर से तू ऊपर उठा, लोगों को तबाही से बचाया, अपने बारे में सोचे बगैर तू ने लोगों की मदद की, अपने घरवालों को सुरक्षित देखकर, तू ने दूसरों की भी रक्षा की। तू ने निःस्वार्थ होकर बहुत कुछ किया, सारी दुनिया के दिल में अपने लिए जगह बनाया । धन्य हो ! तू ने सारी दुनिया को इनसानियत की सीख दी ! यही सफल जीवन है ।"

कुदरत का शाप या वरदान

अनु अप्पुकुट्टन/परियोजना विभाग

केरल के एक गाँव में दो दोस्त रहा करते थे, हसन और रमन । उनकी दोस्ती पूरे गाँव में मशहूर थी । दोनों जैसे दो जिस्म, एक जान थे । बचपन से ही दोनों एक साथ पले, बढे, एक साथ खेलते, एक साथ स्कूल जाते, एक ही थाली में खाना खाते । ऐसी गहरी थी दोनों की दोस्ती । स्कूल में भी दोनों एक साथ ही बैठते । कभी अध्यापिका उन्हें अलग करके बैठने को कहती, वे दोनों रोने लगते और मानो आसमान सर पर चढा लेते । इसलिए उन दोनों को अलग करने के विचार से ही सब दूर रहते ।

पर समय और समाज के बदलते तेवर के साथ इन दोनों की दोस्ती भी बदलने लगी । धर्म के नाम पर बँटता समाज इनकी दोस्ती पर भी हावी होने लगा । ज़माने में फैले धर्म के नाम पर समस्याओं पर उन दोनों के विचार बदलने लगे और देखते ही देखते वे एक दूसरे के सामने आने से भी कतराने लगे ।

पडोसी थे दोनों । अब दोनों के घरों के बीच के दीवारें उँची होने लगी । हसन की शादी हो गई । गाँव के सभी शादी में शामिल हुए सिवाय उसके दोस्त के । सालों बीत गए । पर हसन और रमन अपनी दोस्ती को भूले, अपनी छोटी सी दुनिया बसाकर खुशी से जी रहे थे ।

आज हसन का बडा बेटा जुनैद दसवीं कक्षा में पढ रहा है । हसन की पत्नी फातिमा, बडी ही सुलझी और समझदार है । रमन की छोटी बच्ची गौरी एक साल की है । रमन की पत्नी गीता भी बडी ही सरल है । गीता और फातिमा कई बार अपने अपने पतियों को समझाती, उनके बीच की नफरत को कम करने की कोशिश करती, पर उन दोनों पर इन बातों का कोई असर न पडता ।

पर कुदरत को इस प्यार और नफरत का खेल क्या पता । केरल में बहुत तेज़ बाढ आई । कई घरों के आंगन में पानी भर गया । जुनैद को तेज़ बुखार था और वह आराम कर रहा था । फातिमा कुछ काम में उलझी थी कि अचानक उसने घरके सामने बह रहे पानी में एक छोटा हाथ जैसा कुछ देख लिया । उसने बुखार से तपतपाते अपने बेटे को बुलाया और उसे पानी में दिखता हाथ दिखाया । जुनैद ने बिना कुछ सोचे बगैर पानी में छलाँग मारी और उस डूबते हाथ के पीछे तैरने लगा । समय रहते उसने उस हाथ को पकड लिया और पानी से बाहर निकालकर उसने देखा कि वह रमन की एक साल की बच्ची गौरी है । जुनैद जैसे तैसे गौरी को अपने घर ले आया और रमन के घर पर आवाज़ देकर बताया कि गौरी सही सलामत इनके घर पर है ।

अब बाढ के रुकने का इरादा तो नहीं था। बारिश बढती गई और पानी भी बढता गया । आखिर पानी घर के अंदर भी घुसने लगा । लोगों को समझ आने लगा कि घर में रहना सुरक्षित नहीं है । कई मछवारे, जिनको लोग कभी इज्जत से नहीं देखते, अपनी नाव ले आए और लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुँचाने लगे । रमन के घर से सभी को सुरक्षित जगह पर पहुँचा चुके थे । अब रमन अपनी बेटी गौरी और अपने पुराने दोस्त हसन के लिए चिंतित होने लगा ।

वह मछवारों के साथ नाव में हसन के घर पहुँचा । उसने देखा, हसन के परिवार वाले आधे पानी में डूबे थे । पर उन्होंने गौरी को अपनी गोद में, पानी से ऊपर पकडा है ताकि गौरी भीग न जाएं । बुखार से काँपता जुनैद भी पानी में खडा था । यह देख रमन की आँखें भर आई । वह दौडकर हसन के परिवार वालों के पास गया और एक एक कर सभी को नाव में चढाने लगा ।

हसन भी काफी थक चुका था । रमन ने हसन को हाथ दिया और नाव में चढा दिया। हसन की माँ काफी बूढी थी और बहुत थक चुकी थी । उनसे नाव में चढा नहीं जा रहा था। आखिर रमन पानी में उतरकर झुककर खडा रहा। हसन की माँ रमन की पीठ पर पैर रखकर नाव में चढ गई । यह देख हसन भी समझ गया कि उनकी दोस्ती कितनी गहरी थी ।

अब ये दो परिवार एक शिविर में है । यहाँ न जात है, न धर्म, न ऊंच है, न नीच है, सभी एक समान । यहाँ आकर हसन और रमन को समझ आया कि वे कितनी खोखली बातों के कारण एक दूसरे से दूर हुए थे ।

सभी बाढ से दुखी थे तो यहाँ बाढ के कारण वापस ज़िंदा मिली पुरानी दोस्ती से हसन और रमन खुशी से डूब रहे थे । समझ नहीं आ रहा था - इसे क्या कहें कुदरत का शाप या वरदान !

ओपेरेशन मदद

निशान्त चौबे, विनिर्माण विभाग

शरत ने जब सुबह अपनी टीवी में देखा तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ । उसकी आँखें फटी की फटी रह गई । उसके सामने प्रकृति अपने विकराल रूप में थी । सौम्य, निर्मल जल की धारा अपनी भयावहता से उसके हृदय को कपकँपा रही थी । ईश्वर का अपना देश - केरल, अपने इतिहास के सबसे खराब बाढ़ के प्रकोप को झेल रहा था । कुछ देर तो शरत को साँस ही सुंध गया था, फिर उसने अपने होश को संभाला और अपने घर उसने फोन लगाया ।

रमेश और वीना का घर तो सुरक्षित था पर उनके आसपास के क्षेत्र बाढ़ के चपेट में आ गए थे । घर के सारे समान सही सलामत थे पर वहाँ बिजली, पानी और भोजन का अभाव था । वो सोच ही रहे थे कि आगे क्या किया जाए, उन्हें अपने पुत्र का फोन आया ।

"माँ-बाबा, आप लोग ठीक से है ना ?"

"हम बिल्कुल ठीक है पर आसपास बस पानी ही पानी है । तू कैसा है ? "

"आप लोग चिंता ना करें, मैं कल ही वहाँ पहुँचता हूँ ।"

शरत ने तुरंत अपने काम से छुट्टी ली और हवाई जहाज़ से तिरुवनन्तपुरम आ पहूँचा । कोच्चि एयरपोर्ट पानी की वजह से बंद पड़ गया था और सिर्फ तिरुवनन्तपुरम ही बचा हुआ था बाकि सारे इलाके इस भयावह बाढ़ की चपेट में आ गए थे । सारे नेशलन हाइवे भी बाढ़ से ग्रसित हो चुके थे। उन पर बहुत कम ही यातायात के साधन चल रहे थे । खैर, शरत ने टैक्सी का और अपने घर से निकटतम दूरी तक जैसे - तैसे पहूँच गया ।

उसने देखा हर जगह पानी ही पानी भरा हुआ है और सुबह से उसके माँ-बाप का फोन स्विच ऑफ आ रहा है । उसका मन किसी अनहोनी घट ना से डरा हुआ था । तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी "बचाओ"।

शरत को जहाँ टैक्सी ने छोड़ा था, उसके आगे चलते -चलते वो लगभग पाँच किलोमीटर दूर आ गया था । उसका घर लगभग वहाँ से और चार-पाँच किलोमीटर ही दूर होगा । उसे अपने घर जाने की जल्दी थी इसलिए उसने किसी अन्य साधन या व्यक्ति की प्रतीक्षा नहीं की । घने बादलों और बारिश से वो पूरी तरह भीग चुका था, फिर भी उसे अपने माता-पिता से मिलना था । उसे इस बात की भी सुध नहीं थी कि उसके जेब में पड़ा मोबाइल फोन कब का भींग कर निष्क्रिय हो चुका है ।

"बचाओ...." ।

शरत चौंक पड़ा । उसे कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था पर उसे आवाज़ की दिशा समझ में आ रही थी । उसका मन दुविधा में था, या तो घर जाए और उस राह जहाँ से मदद की पुकार आ रही है । निर्णय करने के लिए समय कम था । दिमाग कह रहा था पहले अपने माता-पिता को देख फिर औरों को देखना । पर दिल चाहता था कि उस आवाज़ की ओर जाया जाए । उस आवाज़ में किसी स्त्री की करुणा, व्यथा साफ झलक रही थी ।

शरत ने समय गँवाए बिना, उस दिशा में कदम अपने आगे बढ़ा दिए । कुछ दूर आगे जाकर पानी का स्तर काफी बढ़ गया । अब चलना संभव नहीं था । शरत ने तैरते हुए आगे की राह तय करने का फैसला किया । पेड़ के पीछे एक छोटा सा घर था जो उस पेड़ के कारण पूरी तरह छुप गया था । उसके घर पर एक वृद्दा मदद की गुहार लगा रही थी । शरत तैरते हुए उस धर तक पहूँचा और वृद्दा के पास पहूँच गया । शरत को देखकर वृद्दा की आँखों में खुशी के आँसू आ गए ।

वृद्दा ने बताया वो इस घर में अकेली रहती है और इस बाढ़ में गाँव के सारे लोग वहाँ से चले गए थे, बस वो ही अकेली रह गई थी । वो अपने बेटे के इंतज़ार में थी, उसे लगा अगर वो वहाँ से चली गई और उसका बेटा आया तो फिर वो उसे कहाँ ढूँढेगा । इसलिए वो वहीं पर रुकी रह गई । परंतु अब उसके बेटे का कोई अता-पता नहीं था । शरत ने उस वृद्धा को संभाला और अपने माता-पिता के बारे में सोचने लगा । अब वो सोच रहा था इस वृद्धा को यहाँ से कैसे निकाला जाएं । तभी उन दोनों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड गई ।

उन्हें पास में गुजरती स्पीड बोट की आवाज़ सुनाई दी, जो इंडियन नेवी की थी । शायद उसकी आवाज़ कम थी या स्पीड बोट की ज्यादा, वो रुकी नहीं । पल भी की खुशी, गम में बदल गई । शरत के पास जितनी भी हिम्मत बची थी, उसने अपना सब ज़ोर लगाया और तैरते हुए पेडके उस पास पहुँच गया । उसे लगा शायद लौटते वक्त बोट वापस आ जाएं । वो लगभग एक घंटे तक वहाँ वैसे ही रुका रहा, पानी सतह पर ऊपर । उसने अपनी सारी उम्मीद लगभग छोड दी । उसका रुतबा, उसका पैसा, आज सभी बेकार साबित हो रहे थे । तभी उसकी आँखें चमक उठीं ।

नेवी की बोट वापस लौटते हुए वहाँ से गुज़री। उन्होंने शरत को देखा, आँखों में आँसू भरे हुए । जल्द ही उन्होंने शरत को अपने बोट में बैठाया । शरत ने वृद्धा के बारे में उन्हें बताया और वृद्धा की भी मदद उन्होंने की । वृद्धा की खुशी का ठिकाना नहीं था । बोट की मदद से शरत अपने घर गया, अपने माँ-बाप से मिला और उन्हें भी साथ लेकर वो कैम्प में चला गया । कैम्प में बैठा हुआ शरत आज दिन भर घटित घटना पर सोच रहा था और उसके चेहरे पर एम मीठी सी मुस्कराहट थी ।

प्रकृति का खेल

परवेश कादियान, विनिर्माण

अगस्त महीने के शुरू होते ही केरल में ओणम त्योहार की तैयारी हो गई थी । पूरे राज्य में खुशी का माहौल उमड रहा था । ऐसा ही हर्षोल्लास का माहौल चालक्कुडि के मनीष के छोटे से मोहल्ले में था । मनीष, अपनी छोटी बहन रेखा के साथ, फूलों की रंगोली, पूक्कलम बनाने के बारे में बातें कर रहा था । दोनों, हर दिन स्कूल से आने के बाद इस सोच में लग जाते थे । दुनिया की सब चिंताओं से दूर मानो यही उनकी ज़िंदगी थी ।

मनीष का घर वैसे तो छोटा था पर उसमें खुशियों की कमी नहीं थी । मनीष के पिता मनोहर मंडी में सब्जी बेचने का काम करते थे और उसकी माँ दिव्या, घर पर सिलाई का काम करती थी । उसके पिता, आमदनी कम होने के चलते मनीष और रेखा को बडे स्कूल में नहीं भेज सकते थे । इसीलिए मनीष और रेखा पास के छोटे से स्कूल में पढने जाते थे ।

ओणम के त्योहार में मनोहर और दिव्या को ज्यादा आमदनी होने की आशा थी । मनीष और रेखा को ओणम को माँ के हाथ का बनाया सद्या खाने के बडे इंतज़ार में थे और फूलों की रंगोली बनाने की सभी तैयारी हो चुकी थी ।

राज्य में मानसून के आने से खूब बारिश हो रही थी । मनोहर ने अपने छोटे से खेत में सब्जियाँ उगाई थी । बारिश के चलते अच्छा पैदावार होने की आशा पूरे घर को थी ।

ओणम के कुछ ही दिन पहले रात का खाना खाकर सब सो रहे थे । अचानक रात को मनीष की आँखें खुली । उसने देखा कि उसका बिस्तर गीला हो गया है । तभी दिया जलाने के लिए नीचे उतरा तो उसने आप को पानी में खडा पाया। वह एकदम ज़ोर से चिल्लाया, "माँ..... पापा...." । ऊपर के कमरे से एकदम उसके पापा नीचे आए तो देखा कि मनीष पानी में खडा चिल्ला रहा था ।

उसके पिता मनोहर समझ नहीं पाए कि यह क्या हो रहा है । उन्होंने बल्ब को जलाया तो देखा, उनके घर का निचले मंज़िल के सभी कमरे पूरे पानी से भर रहा था । और देखते ही देखते पानी ऊपर चढता रहा । मनोहर भी अब पानी में ही खडा था । उन्होंने मनीष को शांत होने को कहा । अचानक लाइट भी चली गई । पूरा घर अंधकार में डूबा । बाहर घनघोर बारिश हो रही थी । मनोहर ने मनीष का हाथ पकडा और धीरे धीरे पानी से होकर ऊपर की मंजिल पर पहुँचा । मोमबत्ती जलाकर रेखा और दिव्या को जगाया, खाने पीने का सामान और अपने घर की कुछ कीमती चीज़ें, जो कुछ हाथ लगा, उसे इकट्ठा किया और घर के छत की ओर चल दिया । मनीष और रेखा घबरा गए थे और पूछ रहे थे कि यह क्या हो रहा है । मनोहर, फोन पर किसी से कोन्टैक्ट करने की कोशिश कर रहा था । लेकिन पूरा का पूरा टेलीफोन लाइन भी बंद हो गया था । अब किसी से सहारा मिलने की भी उम्मीद न थी ।

पूरी रात वे चारों जागे, एक दूसरे के हाथ पकडकर भगवान का नाम लेकर छत पर ढेर लगाए बैठे रहे ।

मनोहर के दिल में आग थी । फिर भी वह अपने बच्चों और पत्नी को दिलासा देते बैठा कि अब घबराने की कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक हो जाएगा ।

धीरे धीरे बारिश कम हो गई । ऐसे ही छत पर बैठकर दो रात काटे । तब तक उनका पानी, खाना सब खतम हुआ था । सब की हिम्मत टूटती जा रही थी । लगा कि यही सब का अंत है । लेकिन अगले दिन सुबह सुबह रेखा ने देखा कि एक नाव थोडी दूर से गुज़र रही है । उनके मन में आशा की किरणें जाग उठीं, चारों ने मिलकर ज़ोर ज़ोर से मदद के लिए पुकारा। भगवान की कृपा से अंत में एक मछुआरे की नज़र वहाँ पहुँची ।

उन लोगों ने नाव को वापस घुमाया और उनके यहाँ पहुँचे । पहले बच्चों को और फिर दिव्या-मनोहर को नाव पर बिठाया गया । घबराए गए बच्चों को शांत करके, उन्हें दिलासा देकर करीब दो घंटे बाढ़ के पानी में नाव चलाकर उन्हें सुरक्षा कैम्प में पहुँचाया ।

सुरक्षा कैम्प पहुँचकर अपने जैसे हज़ारों हमदर्द को देखकर दिव्या की आँखें भर आईं । मनीष, उसके परिवार को बचाए मछुआरों का धन्यवाद करते नहीं थके । अपना काम खतम न समझकर और लोगों के बचाव के लिए जाते उन मछुआरों में से एक का हाथ पकडकर मनीष ने अपने कीमती सामान रखी झोली से भगवान की एक मूर्ति निकाली और उन्हें दी, फिर बोला, "जैसे आप ने हमारी रक्षा की है, वैसे ही ये आपकी रक्षा करेंगे " ।

मदद के हाथ

एन्टणी सोलमण/एचआर

सोमन और सुमा की इकलौती बेटी थी सौम्या । जन्म से ही अंधी थी । अपनी बेटी की आँखों में रोशनी लाने के लिए सोमन और सुमा ने उसका बहुत इलाज किया । देश भर के डाक्टरों से मिले, पूजा-पाठ किए, लेकिन सब निष्फल रहा ।

सौम्या के माता-पिता ने तो उनसे जो हो सकता, वह किया, उसे अच्छी सी शिक्षा दी , उसे दूसरे बच्चों के साथ मिल जुल कर खेलने, पढने और बात करने का मौका बना दिया । सौम्या अपने माता-पिता के प्यार के बंधन में सुरक्षित थी, खुश थी । उनके प्यार ने सौम्या में आत्म विश्वास और सकारात्मक भावनाएं भर दिया, जिसके सहारे वह दुनिया की राहों में आगे बढी ।

ऐसे ही साल बीत गए । सौम्या बडी हो गई । बडी होती वह अपने माता-पिता के प्यार में आश्वस्त होने पर भी असमर्थ लोगों के प्रति बाहर की दुनिया का भेदभाव, असामाजिकता और तिरस्कारपूर्ण भावनाओं से दंग रह गयी । अंधे लोगों की कठिनाइयाँ, परेशानियाँ सब वह ठीक तरह से समझ गई । उसने अपने आप से वादा किया कि वह उनके जैसे अंधे लोगों की ज़िंदगी आसान बनाने के लिए कुछ न कुछ ज़रूर करेगी । इसी विचार से ब्रैली के माध्यम से वह काफी पढाई करती थी ।

उसे मालुम था कि उसके जैसे लोगों को वाल्किंग स्टिक को लेकर हमेशा चलना-फिरना एक बडी मुसीबत है । इसलिए सौम्या ने यह तय किया कि बिना वाल्किंग स्टिक या दूसरे लोगों के सहारे अंधे लोगों को चलने के लिए एक उपाय सोच निकालने की पूरी कोशिश करूँगी ।

सौम्या के लंबी अवधि तक दिन रात के कठिन प्रयास से उसका सपना सच्चा हुआ। उसे ने ऐसा एक टार्च बनाया, जिसके इस्तेमोल से आगे की जो भी रुकावटें हैं उसे पहचान सकेंगे । यह टार्च, कंपन के सिद्धांत के आधार पर काम करता था । उस टार्च को सौम्या ने नाम दिया, "स्वाधीनता टार्च" । यह टार्च बहुत हिट हुआ । आँखों की रोशनी विहीन लोगों को यह टार्च रोशनी प्रदान करता रहा । अंधे लोगों के बीच इसका पूरा स्वागत हुआ । वे वाल्किंग स्टिक की मुसीबत से हमेशा के लिए छुट गए ।

सौम्या ने इस टॉर्च से प्राप्त सभी आमदनी भी अंधे लोगों की सहायता के लिए दान करने का इरादा किया । ऐसे जन सेवा के लिए उसने अपना पूरा जीवन समर्पित किया ।

कोई भी तकलीफ़ जिंदगी में आए, उसे धीरता से सामना करके आगे बढने का मिसाल और प्रेरणा बनी सौम्या । उसने संसार को सिखा दिया कि हमारी ज़िंदगी, दूसरों के जीवन सुधारने में काम आनी चाहिए । हम सब इंसान हाथ में हाथ मिलाकर, हमदर्दी से आगे बढे तो दुनिया में प्रगति और शांति फैल जाएगी । यह धरती, खुशी का खजाना बन जाएगी ।

एकता

एमोन टी सी आर, पी & यू

उस विद्यालय के तीन छात्र अपने अध्यापक के पास पहुँचे । और बोले कि सर, "हम तीनों भिन्न भिन्न धर्म के विश्वासी हैं । हम दोस्त ही नहीं, बल्कि हमारा बंधन भाइयों के जैसा है । हमारा रिश्ता, बहुत गाढा है । लेकिन हम रोज़ सुनते हैं कि धर्म के नाम पर हिंसा, असहिष्णुता, मार-पीठ हो रही है । क्या धर्म कहता है कि हमें बस उसी धर्म के लोगों से प्यार-दोस्ती रखनी चाहिए?" । छात्रों ने मेरा मशवरा पूछते हुए यह भी कहा कि ऐसे उलझनों से दूर न रहेंगे तो उन्हें डर है कि उनकी दोस्ती में कमज़ोरी आ जाएगी ।

अध्यापक ने कहा, "मैं इनका जवाब बातों से नहीं देना चाहता हूँ । एक काम करो-कल तुम तीनों कुछ खाए बिना सुबह स्कूल जाना । और न ही कुछ खाने को लाना ।" यह सुनकर तीनों छात्र दंग रह गए, ऐसा क्यों ! और उन्होंने मन में सोचे कि जब अध्यापक ने कहा है तो ज़रूर कुछ बात होगी ।

अगले दिन तीन छात्र अध्यापक के कहे अनुसार बिना कुछ खाएं स्कूल पहुँचे। अध्यापक के कहे अनुसार तीनों जमकर खेलें, मगर मन में जिज्ञासा थी कि सर ने किस कारण से ऐसा कहा होगा । फिर तय कर लिया कि, चलो, सर कहेंगे तो कुछ बात ज़रूर होगी ।

जी भर खेलने के बाद थककर तीनों छात्र फिर अध्यापक के पास पहुँचे । अध्यापक ने उन तीनों को अलग अलग कमरे में बिठाया और पूछा, "कैसा लग रहा है ? थक गए हैं क्या ? भूख लग रही है ?" तीनों छात्रों ने कहा, "भूख के कारण आँखें दिखाई नहीं दे रही हैं ।" इस पर अध्यापक ने वादा किया कि वे उन्हें कुछ खास खिलाएंगे । यह कहकर उन्होंने पहले छात्र को कुछ कच्चा चावल दिया, दूसरे को पानी और तीसरे को नमक । और कहा, "चलो, अपनी भूख और प्यास मिटा लो ।" तीनों छात्र चौंक गए और एक एक करके अध्यापक से कहें कि नमक से कैसे भूख मिटेगी ? चावल तो पका नहीं है फिर कैसे? बस पानी से भूख मिटेगी ? । इतने में अध्यापक ने इन्हें अपनी ओर बुलाया और कहा, "आपके इन शब्दों में ही आपके कल के सवाल का जवाब है । धर्म, जात-पात तो अलग अलग हो सकता है, लेकिन सबमें इनका गुण भी है । चावल, पानी, नमक - सबके अलग अलग अस्तित्व है, लेकिन सब मिल जुलकर एक हो जाने पर ही यह खाने लायक बन सकते हैं। ठीक उसी तरह हमारी संस्कृति और परंपरा का पोषण, मिलना-जुलना, एक दूसरे का साथ देना, आपस में बाँट देने ही होता है ।"

आगे वे बोले, "अकेले में हर एक व्यक्ति और धर्म में शक्ति होती है और दुर्भलता भी मौजूद है । हर धर्म और जाति में अनेक गुण हैं । जब ये मिले जुलें, इसका संपूर्ण रूप बाहर आता है । खुशनुमा चावल बनने के लिए कई सामग्री की ज़रूरत पडती है। ठीक उसी तरह अपने देश की उन्नति और कल्याण के लिए हम हर नागरिक को मिल जुलकर आगे बढना चाहिए । एकता से ही हम सर्वशक्त बन सकते हैं । चलो, हम सब मिलकर आगे बढें राष्ट्र के कल्याण की ओर, हमारी अनूप संस्कृति को आगे बढाते, हमारे अनमोल संस्कार को और सुदृढ बनाकर । ऐसे ही हमें दिखना है दुनिया को हमारी शक्ति, अनेकता में एकता की ।

आज का मानव

शिवलीला एल, वित्त

शायद लाल ही वह रंग है
जिससे शुरू होती है ज़िंदगी
या वह है सफ़ेद, माँ का दूध
जब माँ का दूध ही खुशी लाता है ।

मगर होती है ज़िंदगी शुरू कब ?
जब देखते हैं रंग भरी होली?
या खून में नहलाते वैरों की गोली ?

टीवी का पर्दा, भरा है रंगों से
जो हकीकी दुनिया से है रंगीला,
इसी दुनिया से ज्यादा लगाव भी है हमें
फिर फैलाते हैं लाल लाल गबराहट
जहाँ देखूँ खून और खतरा,
चाहे वह प्यास के वास्ते हो
या कोई हैवान का मसला

न सिंदूर का पहचान,
न माँ-बाप का मान,
मिट्टी में मिला देते हैं
हर आदर्श और जीवन

पता है हर रंग मिलके
रूप देता है सफेद को,
पर एक ही रंग काफी है
जो बनाते "अनेक" से "एक"

शायद लाल ही वह रंग
जो ज़िंदगी देता है
और वही जो देता है
गुलाबों को रंग व खुशबू

वही लाल जो बनते हैं
माथे पर सिंदूर
और वही जो जलते हैं
आँखों में तेज़ ।
जब भूल जाते है हम
कि हम मानव है पहले
चाहे जो भी हो वेश ।

प्यार

एन्टणी सोलमन, एचआर-संपदा

मिलता है प्यार, जल प्रलय जैसे आपदा में
अपनी कंधों को सीढी बना देते युवाओं में !
स्वजीवन फेंकते हुए भी दूसरों को
ज़िंदगी देने वाले मछुवारों में ।
मिलता है प्यार उस नन्ही प्यारी में
जो तोडती है अपनी "पॉकट मणी" की बचत से !
मिलता है प्यार उन सबके दिलों में
जो देते हैं प्यार से अपने घर से सामान !
केरल में देखा दुनिया ने "जल प्रलय"
असल में बदल गया वह "प्यार प्रलय" !
हम सबों में दिल भरा है प्यार से हमेशा
इस प्यार बाँटने में हिचकिए मत.....
दे दो प्यार भरा मुस्कुराहट हर पर
बनेगी ज़िंदगी सुहानी हर पल !!
प्यार ही जीवन... प्यार ही ज़िंदगी,
प्यार बिना जीवन अधूरी कहानी ...

कौन बनेगा 'मिस रंगी'

दुर्गा प्रिया जी, पी&सीएस विभाग

देव दरबार में एक दिन
चली रंगों की प्रतियोगिता
कौन है सुन्दर ?
कौन बनेगा 'मिस रंगी' !
सब रंग हुए खुश
जज बने
आसमान और धरती,
पढ़ा प्रतियोगिता का नियम
एक एक करके आना,
अपना महत्व कहकर जाना ।
प्रतियोगिता हुई शुरू
एक एक करके रंगों को बुलाया,
पहले आया सफेद कहा,
मैं पवित्रता का सूचक हूँ,
शांति प्रिय, मलिनता से दूर ।
काला आया कहा,
रात को मैं कितना सुंदर बनाता हूँ,
आसमान को मैं बरसाता हूँ ।
हरा आया कहा,
प्रकृति को देखें- हरी भरी,
श्रेष्ठता और फलपुष्टि का रंग हूँ मैं ।
नीला आया बोला,
पूरी धरती पर मैं हूँ छाया,
नीला आसमान,नीला सागर ।
एक एक करके आगे आए
पीला, बैंगनी, संतरा, लाल...
सबने अपना दायित्व पूरा निभाया
तभी आया अंत,
प्रतियोगिता खतम !
मंच के बगल में सुना शोर,
सब कर रहे थे झगडा,
प्रतियोगिता, झगडे में बदली ।
चुप रहो जज चिल्लाए,
क्यों मचाते हो शोर
क्यों लडते हो आपस में !
आसमान बोले,
मुझे देखो कितना सुंदर, कभी नीला,
बीच बीच में चांदी भरा बादल,
जब भरते पानी इन में
बादल बनते काला,
इनसे जब सूरज निकलें
तब निकल आये सतरंगी ।
सात रंगों का मिलन
कितना सुन्दर लगता है,
और शाम को लालिमा से भरा
मेरा क्षितिज,
अरे कौन सा रंग बडा, कौन छोटा,
कौन सुन्दर है कौन असुंदर ।
धरती की आई बारी,
बोली वह,
हाँ आसमान आपने सही कहा,
और मेरी बात देखो,
कितनी सुन्दर हूँ मैं,
जंगलों से घेरी,
हरियाली के बीच ।
रंगीले फूल, हर रंग के फैले,
सागर देखो,
नीला, हरा, रंगों का मेला,
जब बन जाते ये लहर,
पहनते सफेद रंग के पोशाक ।
कहीं संतरी मरुस्थल
हरियाली के बीच दूध सम प्रवाह ।
अरे यह दुनिया
रंगों की मेला है,
सब अपने में सुंदर है
सब में होती है कमी ।
एक का महत्व दुनिया देखती है तभी,
जब दूसरा रंग
उसका साथ देता है ।
सब को एक होना है
तभी संतरंगी चमकती है !
रंगो ने महसूस किया
अपनी गलती,
सब ने अपने मन से मलिनता निकाली ।
जजों ने पूछा,
बताओ, कौन बनेगा मिस रंगी ?
वर्णों ने एकजुट कहा,
मिस रंगी बनेगी
सतरंगी !

रंग

निशांत चौबे, विनिर्माण विभाग

जीवन के इन श्वेत पन्नों में
अपने प्रेम का रंग तुम भरो,
इस बेरंगी, बेरूखी जहाँ से
इन्द्रधनुषी आसमान पर मुझे ले चलो ।
ले चलो मुझे वहाँ, जहाँ
किरणें सात रंगों में बिखरती हो,
अपने यौवन की छटा निहार
इठला-इठलाकर और निखरती हो ।
जहाँ मायूसी, बेबसी का साया
हमसे कोसों दूर रहे,
जहाँ सुनहरे भविष्य का रंग
हमारे इन आँखों पे चढ़े ।
जहाँ बचपन की मुस्कुराहट अपने संग
एक नया रंग ले कर आए,
जहाँ बुढ़ापे की समझ मिलकर उसमें
उसे और भी रंगीन बनाए ।
जहाँ यौवन की स्वतंत्रता, सुंदरता
उसमें और भी निखार लाए,
जहाँ सब आपस में मिलकर
एक अनुपम दृश्य बनाए ।
जहाँ प्रेम और विश्वास की दृढ़ता
रिश्तों के धागों में मज़बूती लाए
जहाँ ईर्ष्या, अहम, क्रोध की
हर समय आहूति दी जाए ।
जहाँ नीले आसमांन के साये में
हरी धरती मंद मंद मुस्कराती हो,
और अपनी गोद में मनुज को
वो बड़े प्यार से सुलाती हो ।
जहाँ बारिश की बूँदे अपनी नमी से
एक नया रंग भरती हो,
और अपने अस्तित्व को खोकर
धरती को सुहागन करती हो ।
ले चलो प्रिये ! मुझे वहाँ
जहाँ हकीकत सपनों से सुंदर हो,
जहाँ प्रेम के रंगों से रंगा
स्वर्ग सभी के अंदर हो ।

पैगाम

एस युवराज / एचआर

क्या न दिया..... हे भगवान,
सुरम्य संसार देखने दिए नयन
घुमक्कड बनवाने दिए पैर
मददशील बनवाने दिए हाथ
अजीब तेरी शक्ति,
गुणगान करने दिया जीभ
भूले बिना तुझे रहने दिया है स्मरण
क्या न दिया..... हे भगवान ।

कर्तव्य भूलते रहते मगर हम मानव
करते रहते जुल्म दूजे पर हम दानव
माफ़ी का दायरा नहीं तेरा हम पर
हर दिन समझाते रहते तू जीवन भर
फिर भी, कर्तव्य भूले रहते हम मानव ।

जीवन का पैगाम सुन लो हे मानव
जनम पर लंबाई पर न भरोसा रख
हाँ.... उम्र की पुष्टि नहीं
हर किसी को संतुष्टि नहीं
हम बने ओस कण उनकी छाया में
बारम्बार का यही चक्कर है हे मानव ।

कर्तव्य भूले तुम आगमन का
दमन करो पापों का,
नमन करो भगवान का,
पालन करो कर्तव्यों का,
त्यजन करो चक्करों का,
बनें पात्र, सृजक की अपार अनुकंपा का
बनें पात्र, सृजक की अपार अनुकंपा का ।

सार्थक जीवन

उमादेवी वी एन/पीःसीएस

प्यार! यह शब्द ही द्योतक है ज़िंदगी का,
जिसके बिना जीवन ही अधूरा है ।
कुछ भी पाएं, हम कहीं भी जाएं,
नाम पाएं, धन संपत्ति पाएं,
एहमियत नहीं रहता इस शान-शौकत की,
अगर न पाएं प्यार अपनों की ।

प्यार ! वह शब्द है जो किसी को
बाँधे रखता है अपनों के भडकने नहीं देता है।
हम फिरकर उसी बिंदु पर
आ मिल जाते हैं जहाँ पाया है अपनापन !
यह गाथा है, जो सिर्फ मानव का ही नहीं
सभी का है, जिन्होंने पाया है जन्म ।

प्यार ! वह शब्द है जो भरता है रंग
ज़िंदगी में संकट आ जाएं जितनी भी
तूफानों में जकडे जाए चाहे
बाढ़ आ जाएं, अकाल पड जाएं,
प्यार भरे हाथों के सहारे
उभर जाएंगे, निस्संदेह पार करेंगे हम ।

इसलिए हे मानव ! सीखो करना प्यार
कर लें ऐसे काम जिससे पाए प्यार
वही हमारा एक मात्र सहारा रहेगा
काम नहीं आएगा पद या नाम का
धन का यहाँ नहीं कोई काम, सिर्फ
मानवता ही मानव का काम आएगा ।

दुनिया क्यों बदल जाती है ?

एन्ड्रिया ए सेन, सी आर स्कूल

सुबह जब सूरज की किरनें
धरती पर छा जाती हैं,
दिल में शांति भर जाती है
एक कप चाय और
होंठों पर प्रार्थना के साथ
दिन हमारा शुरू हो जाता है ।

हम चलें स्कूल या कॉलेज,
दफ़्तर या दूकान,
इस दुनिया के हर कोने में
हर इंसान, पशु-पक्षी,
कशमकश में खडा है ।
ज़िंदगी में कुछ हम पर बुरा गुज़रा तो
दिल में बडी हल-चल सी होती है
लेकिन हम यह जानते ही हैं कि
यह हल-चल, दर्द, जीवन का हिस्सा ही है ।

दिन के अंत में,
रात के पहरे में,
हर इंसान अपने सपनों की दुनिया में
खो जाता है ।

नींद की दुनिया में गुज़रने के पहले,
दिल को खुश करने वाली
यादें निकल आती हैं,
ये जी भर देती हैं ।
तो फिर दिल में यह सवाल उभर आता है
कि यह दुनिया क्यों बदल जाती है ?
तो दिल से ही जवाब भी सामने आता है,
यह भी जीवन का हिस्सा ही है ।

हिंदी-माथे की बिंदी

निशांत चौबे/विनिर्माण विभाग

लोगों की जनवाणी है
कुछ जानी-पहचानी है,
भारत के माथे की बिंदी,
हिंदी बडी स्वाभिमानी है ।

एकता के सूत्र में पिरोती
प्रेम से अपने सबको भिंगोती,
सबके हृदय के आशा दीप
अपने हाथों से वो संजोती ।

लोगों की मुस्कान है
संस्कृत की अभिमान है
हिंदी इकलौती भाषा है जो
भारत की पहचान है ।

इसके करीब जो भी आता
पलभर में इसका हो जाता,
इसकी मनभावनी सुगंध में
हर कोई खुद ब खुद खो जाता ।

आज़ादी की उस लडाई में
इसने बडा साथ निभाया था,
एक कोने के विचार को, देश के
दूसरे कोने तक पहुँचाया था ।

अग्रेज़ी साम्राज्य के सीने पर
तलवार बन कर बरसी थी,
आमसभा से संसद तक
हिंदी हर जगह गरजी थी ।

अंग्रेज़ तो चले गए पर
अंग्रेज़ी पीछे छोड गए
हिंदी के बच्चे ही उससे
अपने मुँह को मोड गए ।

अंग्रेज़ी में बोलने वाले ही
बस जानकार अब कहलाते हैं
हिंदी में जो बात करें वो
बस गँवार ही समझे जाते हैं ।

अपने आधार को छोड लोग
दूसरों के पीछे जाते हैं,
ना वे उनके हो पाते हैं और
ना ही अपने रह जाते हैं ।

दूसरों से हम बिलकुल सीखें
पर अपने पर स्वाभिमान रखें
अपनी धरोहर, अपनी संपदा का
हम सम्मान करें, अभिमान रखें ।

हिंदी हिंद की भाषा है
हमारे गौरव की परिभाषा है
अपने प्राणों का उत्सर्ग किए
उन बलिदानियों की अभिलाषा है ।

जितना हम से हो सके हम
उतना हिंदी का प्रचार करें,
अपने हृदय में हमेशा हम
जनभाषा हिंदी का आभार रखें ।

****

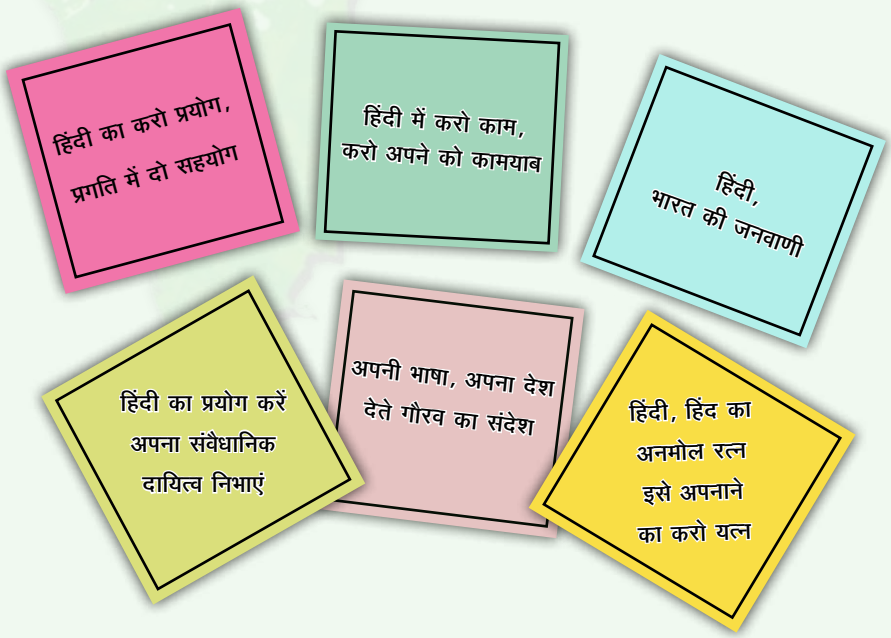

फोटोग्राफ : श्री महेश विजयन, ओएम&एस विभाग